मेरी खेती

Page No. 1-23 / December 2021

- खेत खलियान
- पशुपालन - पशुचारा
- मशीनरी
- सरकारी नीतियां
- सब्जी

- किसान समाचार
- औषधीय खेती
- प्रगतिशील किसान
- जनवरी माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

krishan@merikheti.com
www.merikheti.com
+91 766 8256 275

संपादकीय

कृषि कानूनों की वापसी और किसानी

जिस देश की 80 फीसद आबादी परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से खेती किसानी से जुड़ी हो वहां किसानों की उपेक्षा कोई नहीं कर सकता। वह चाहे दृढ़ इच्छाशक्ति और कठोर निर्णय के आदी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही क्यों न हों। आखिरकार प्रधानमंत्री को देशवासियों से क्षमा मांगते हुए कृषि कानूनों को वापस लेने की घोषणा करनी ही पड़ी। उन्होंने दैवीय शक्तियों का आह्वान करते हुए कहा कि हे देवि मुझे इतनी शक्ति दो कि शुभकार्य करने से पीछे न हटूं। उन्होंने स्पष्ट किया कि 29 नवंबर को शुरू हो रहे संसद सत्र में कानून रद्द करने का प्रस्ताव लाया जाएगा। मोदी सरकार ने कृषि क्षेत्र में कई लाभकारी और अहम फैसले लिए लेकिन कृषि कानूनों को अमल में लाने से उन प्रयासों पर पानी फिर गया। प्रधानमंत्री ने देश के किसानों की छोटी जोत और उससे जीविका संचालन की दिक्कतों का मार्मिक जिक्र किया लेकिन लंबे समय तक कानून वापसी की मांग पर अड़े किसानों की अनदेखी भी उनसे छिपी नहीं रही।

कानून वापसी के आन्दोलन में तकरीबन 700 किसानों को जान गंवानी पड़ी। राजनीतिक समीक्षक इसे राजनीक पैतरे बाजी से जोड़ सकते हैं लेकिन यदि कानून वापसी का निर्णय उनके द्वारा लिया गया है तो वह काबिले तारीफ है। कानून को लागू करने और उसके समर्थन में माहौल बनाने में सरकार ने ऐडी चोटी का जोर लगाया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सभी संस्थान के निदेशकों ने प्रेस के माध्यम से कानून के फायादे गिनाने का प्रयास किया। पद्मश्री किसानों ने भी ज्यादातर सरकार का पक्ष लिया लेकिन कोई भी मत बहुसंख्यक किसानों की अनदेखी की हुंकार के आगे नहीं टिक पाया। सरकार ने अपने पक्ष में कई किसान संगठनों को भी खड़ा किया लेकिन कहीं न कहीं कानून को जीरो आवर्स में लाने जैसे सरकार के निर्णय के चलते उसे विवादास्पद होने के कलंक से मुक्ति नहीं मिल सकी। आन्दोलन चलने के दौरान यह मसला भी भरपूर उठाया गया कि आन्दोलन में पंजाब, हरियाणा के अलावा अन्य राज्यों के किसान नहीं हैं लेकिन किसानों को डिगाने की कोशिशें नाकाम रहीं। यूंतो सरकार कानून को लेकर काफी कुछ समीक्षा कर चुकी है लेकिन कानून वापसी के निर्णय के बाद भी समीक्षा का दौर जारी रहेगा। बहुसंख्यक किसानों वाले देश में कृषि और किसानों का भरोसे में लिए बगैर किसी ठोस नीति के अमल लाने की कल्पना भविष्य में भी कोई सरकार शायद ही कर पाए। विरोधी इसे मोदी सरकार की हार के रूप में प्रस्तुत करें लेकिन सचाई यह है कि देश प्रधानमंत्री के दूसरे कार्यकाल में भी एक कुशल कृषि मंत्री का नेतृत्व नहीं पा सका। सरल स्वाभावी राधा मोहन सिंह के बाद नरेन्द्र सिंह तौमर भी किसानों को नब्ज नहीं पकड़ पाए। ऐसा भी नहीं है कि इन दोनों ने किसानों के विषय में नहीं सोचा। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, हर खेत तक पानी योजना, सम्मान निधि के माध्यम से सीधे राहत, फसल बीमा योजना में संसोधन जैसे प्रयास किसी तरह कमतर करके नहीं आंके जा सकते लेकिन कृषि क्षेत्र में आमूल चूक परिवर्तन की दिशा में उठाए जाने वाले सार्थक कदमों से भी सरकार किसानों का भरोसा नहीं जीत पाई।

कृषि कानूनों का मुद्दा भले ही जिस तरह से उछला हो लेकिन डीजल पर तेजी, खाद की किल्लत ने सरकार से काफी हद तक किसानों का मोहभंग किया है। इस सचाई को झुठलाने वाले खुद भी गुमराह हैं और बाकी को भी गुमराह करने का काम कर रहे हैं। कृषि कानूनों की वापसी के बाद सरकार को नए सिरे से किसानों की मनः स्थिति के अनुरूप नीति बनानी होंगी।

दिलीप यादव
मेरी खेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

जानिए सरसों की बुआई के बाद फसल की कैसे करें देखभाल

किसान भाइयों यदि हम आज सरसों की फसल की बात करे तो आजकल सरसों के तेल के दाम बहुत ऊंचे होने के कारण इसका महत्व बढ़ गया है। प्रत्येक किसान अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए सरसों की फसल करना चाहेगा। उस पर यदि सरसों की फसल अच्छी हो जाये तो सोने पर सुहागा हो जायेगा। इसके लिये किसान भाइयों को शुरू से अंत तक फसल की देखभाल करनी होगी। किसान भाइयों को समय-समय पर जरूरत के हिसाब से खाद-पानी, निराई-गुड़ाई, रोग, कीट प्रकोप से बचाने के अनेक उपाय करने होंगे।

सबसे पहले पौधों की दूरी का ध्यान रखें : -

बुआई के बाद सबसे पहले किसान भाइयों को बुआई के लगभग 15 से 20 दिनों के बाद खेत का निरीक्षण करना चाहिये तथा पौधों का विरलीकरण यानी निश्चित दूरी से अधिक पौधों की छंटाई करनी चाहिये। इससे फसल को दो तरह के लाभ मिलते हैं। पहला लाभ यह कि पौधों के लिए आवश्यक 10-15 सेन्टीमीटर की दूरी मिल जाती है। जिससे फसल को होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है। दूसरा लाभ यह है कि खरपतवार का नियंत्रण भी हो जाता है।

सिंचाई का विशेष प्रबंध करें : -

सरसों की फसल के लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी होती है। बरसात होती है तो उसका ध्यान रखते हुए सिंचाई का प्रबंधन करना होता है। सरसों की अच्छी फसल के लिए खेत की नमी, फसल की नस्ल और मिट्टी की श्रेणी के अनुसार किसान भाइयों को खेत की जांच पड़ताल करनी चाहिये। उसके बाद आवश्यकता हो तो पहली सिंचाई 15 से 20 दिन में ही करें। उसके बाद 30 से 40 दिन बाद उस समय सिंचाई करें जब फूल आने वाले हों। इसके बाद तीसरी सिंचाई 2 से ढाई महीने के बाद उस समय करनी चाहिये जब फलियां बनने वाली हों। जहां पर पानी की कमी हो या पानी खारा हो तो किसान भाइयों को चाहिये कि अपने खेतों में सिर्फ एक ही बार सिंचाई करें।

कैसे करें खरपतवार का नियंत्रण : -

सिंचाई के अच्छे प्रबंधन के साथ ही सरसों की फसल की देखभाल में खरपतवार का नियंत्रण करना बहुत जरूरी होता है। क्योंकि किसान भाई जब खेत में खाद व सिंचाई का अच्छा प्रबंधन करते हैं तो खेत में सरसों के पौधों के साथ ही उसमें उग आये खरपतवार भी तेजी से विकसित होने लगते हैं। इसका फसल पर सीधा प्रभाव पड़ने लगता है। इसलिये किसान भाइयों को चाहिये कि सरसों की फसल की देखभाल करते समय खरपतवार के नियंत्रण पर विशेष ध्यान दें। खरपतवार का नियंत्रण इस प्रकार करना चाहिये:-

1.बुआई के लगभग 25 से 30 दिन बाद निराई गुड़ाई करनी चाहिये। इससे पौधों के सांस लेने की क्षमता बढ़ जाती है तथा इससे पौधों को तेजी से अच्छा विकास होता है।

2.खरपतवार का अच्छी तरह नियंत्रण करने से फसल में 60 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। किसान भाइयों को अच्छी फसल का लाभ हासिल करने के लिए खरपतवार का प्रबंधन करना ही होगा।

3.खरपतवार के नियंत्रण के लिए किसान भाई रासायनिक पदार्थो का भी उपयोग कर सकते हैं। इसके लिए पेन्डी मिथैलीन (30 ईसी) की 3.5 लीटर को 1000 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के तुरन्त बाद छिड़काव करना चाहिये। यदि पेन्डी मिथेलीन का प्रबंध न हो सके उसकी जगह फ्लुक्लोरेलिन (45 ईसी) का घोल मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। इससे खरपतवार नहीं उत्पन्न होता है।

कीट प्रकोप व रोग का ऐसे करें उपचार : -

कहते हैं कि जब तक फसल सुरक्षित किसान भाई के घर न पहुंच जाये तब तक अनेक बाधाएं फसलों में लगतीं रहतीं हैं। ऐसी ही एक बड़ी व्याधि हैं कीट प्रकोप और फसली रोग। इनसे बचाने के लिए किसान भाइयों को लगातार अपनी फसल की निगरानी करते रहना चाहिये और जो भी कीटों का प्रकोप और रोग के संकेत दिखाई दें तत्काल उनका उपचार करना चाहिये। वरना फसल की पैदावार काफी प्रभावित होती है और किसान भाइयों को होने वाले अच्छे लाभ पर ग्रहण लग जाता है। आइये जानते हैं कि सरसों की फसल पर कौन-कौन से रोग और कीट लगते हैं और किस प्रकार से किसान भाइयों को उनका उपचार करना चाहिये। सरसों की फसल पर लगने वाले रोग व कीट इस प्रकार हैं:-

1.चेंपा या माहू
2.आरा मक्खी
3.चितकबरा कीट
4.लीफ माइनर
5.बिहार हेयरी केटर पिलर
6.सफेद रतुवा
7.काला धब्बा या पर्ण चित्ती
8.चूर्णिल आसिता
9.मृदूरोमिल आसिता
10.तना गलन

1. चेंपा या माहू : -सरसों का प्रमुख कीट चेंपा या माहू है। जो फसल को पूरी तरह से बर्बाद कर देता है। सरसों में लगने वाले माहू पंखों वाले और बिना पंखों वाले हरे या सिलेटी रंग के होते हैं। इनकी लम्बी डेढ़ से तीन मिलीमीटर होती है। इस कीट के शिशु व प्रौढ़ पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों के रस चूसकर उनको कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। इस कीट के प्रकोप का खतरा दिसम्बर से लेकर मार्च तक बना रहता है। इस दौरान किसान भाइयों को सतर्क रहना चाहिये।

क्या उपाय करने चाहिये : जब फसल चेंपा या माहू से प्रभावित दिखें और उसका प्रभाव बढ़ता दिखे तो किसान भाइयों को तत्काल एक्टिव होकर डाइमिथोएट 30 ईसी या मोनोक्रोटोफास (न्यूवाक्रोन) का लिक्विड एक लीटर को 800 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिये। यदि दुबारा कीट का प्रकोप हों तो 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। माहू से प्रभावित
पौधों की शाखाओं को तोड़कर जमीन में दबा देना चाहिये। इसके अलावा किसान भाइयों को माहू से प्रभावित फसल को बचाने के लिए कीट नाशी फेंटोथिओन 50 ईसी एक लीटर को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। इसका छिड़काव करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि शाम के समय स्प्रे करना होगा।

फ्रेन्च गेंदे की हाइब्रिड किस्में: (डबल)बोलेरो, जिप्सी डवार्फ डबल, लेमन ड्राप, बरसीप गोल्ड, बोनिटा, बरसीप रेड एण्ड गोल्ड, हारमनी, रेड वोकेड आदि। (सिंगल) टेट्रा रफल्ड रेड, सन्नी,नॉटी मेरियटा आदि।

2.आरा मक्खी : - सरसों की फसल में लगने वाले इस कीट के नियंत्रण के लिए मेलाथियान 50 ईसी की एक लीटर को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करना चाहिये। एक बार में कीट न खत्म हों तो दुबारा छिड़काव करना चाहिये।

3.चितकबरा कीट : - इस कीट से बचाव करने के लिए प्रति हेक्टेयर के हिसाब से क्यूलनालफास चूर्ण को 1.5 प्रतिशत को मिट्टी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। जब इस कीट का प्रकोप अपने चरम सीमा पर पहुंच जाये तो उस समय मेलाथियान 50 ईसी की 500 मि.ली. मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़कना चाहिये।

4.लीफ माइनर्रे : - इस कीट के प्रकोप के दिखते ही मेलाथियान 50 ईसी का छिड़काव करने से लाभ मिलेगा।

5.बिहार हेयरी केटर पिलर : - डाइमोथिएट के घोल का छिड़काव करने से इस कीट से बचाव हो सकता है।

6.सफेद रतुर्वा : - सरसों की फसल में लगने वाले रोग से बचाव के लिए मैन्कोजेब (डाइथेन एम-45) के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार तीन बार तक छिड़काव किया जा सकता है।

7.काला धब्बा या पर्ण चित्ती : - इस रोग से बचाव के लिए आईप्रोडियाँन, मेन्कोजेब के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

8.चूर्णिल आसिता : - इस रोग की रोकथाम करने के लिए सल्फर का 0.2 प्रतिशत या डिनोकाप 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करे।

9.मृदूरोमिल आसिता : - सफेद रतुआ के प्रबंधन से ये रोग अपने आप ही नियंत्रित हो जाता है।

10.तना गलन : - फंफूदीनाशक कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत का छिड़काव फूल आने के समय किया जाना चाहिये। बुआई के लगभग 60-70 दिन बाद यह रोग लगता है। उसी समय रोगनाशी का छिड़काव करने से फायदा मिलता है।

जानिये कैसे करें जौ की बुआई और देखभाल

जौ रबी सीजन की प्रमुख फसल है। जौ का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाओं, धार्मिक कार्यो, बेकरी, वाइन, पेपर, फाइबर पेपर, फाइबर बोर्ड जैसे उद्योग में किया जाता है। इसके अलावा इसका प्रयोग पशु आहार व चारे में भी किया जाता है। इसलिये जौ की खेती करना अब फायदे का सौदा है।आइये जानते हैं कि जौ की बुआई किस प्रकार की जाती है और बुआई के बाद फसल की देखभाल कैसे की जाती है।

कैसे की जाती है जौ की बुआई :-

समशीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्र की बलुई, बलुई दोमट के अलावा क्षारीय व लवणीय भूमि में भी जौ की खेती की जा सकती है। दोमट मिट्टी को जौ की खेती की लिए सबसे उत्तम माना जाता है। जौ की बुआई 25-30 डिग्री सेंटीग्रेट के तापमान में की जाती है। जलभराव वाले खेतों में जौ की खेती नहीं की जा सकती है।

जौ की बुआई करने से पहले खेत को अच्छी तरह से तैयार किया जाता है। सबसे पहले हैरों से खेत की जुताई करें और उसके बाद क्रास जुताई दो बार करनी चाहिये। इसके बाद पाटा लगाकर मिट्टी की भुरभुरी बनानी चाहिये। इसके बाद क्यूनालफॉस या मिभाइल पैराथियोन चूर्ण का छिड़काव करना चाहिये।

नवम्बर और दिसम्बर के महीने में पलेवा करके बुआई करनी चाहिये। बुआई करते समय किसान भाइयों को ये बात ध्यान रखनी होगी कि लाइन से लाइन की दूरी एक से डेढ़ फुट की होनी चाहिये। प्रति हेक्टेयर के लिए जौ का बीज 100 किग्रा बुआई के लिए चाहिये। देरी से बुआई करने पर किसान भाइयों को सावधानी बरतनी होती है। बीज की मात्रा 25 प्रतिशत बढ़ानी होती है तथा लाइन से लाइन की दूरी भी अधिक रखनी पड़ती है।

जौ की बुआई के बाद फसल की देखभाल ऐसे करें :-

जौ की बुआई करने के बाद अच्छी फसल लेने के लिये किसान भाइयों को खेत की हमेशा निगरानी करना चाहिये।साथ ही समय-समय पर सिंचाई, खाद का छिड़काव, रोग नाशक व कीटनाशकों का उपयोग करना होता है।आइये जानते हैं कि कब किस चीज की खेती के लिए जरूरत होती है।

जौ रबी सीजन की प्रमुख फसल है। जौ का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाओं, धार्मिक कार्यो, बेकरी, वाइन, पेपर, फाइबर पेपर, फाइबर बोर्ड जैसे उद्योग में किया जाता है। इसके अलावा इसका प्रयोग पशु आहार व चारे में भी किया जाता है। इसलिये जौ की खेती करना अब फायदे का सौदा है।आइये जानते हैं कि जौ की बुआई किस प्रकार की जाती है और बुआई के बाद फसल की देखभाल कैसे की जाती है।

कैसे की जाती है जौ की बुआई : -

समशीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्र की बलुई, बलुई दोमट के अलावा क्षारीय व लवणीय भूमि में भी जौ की खेती की जा सकती है। दोमट मिट्टी को जौ की खेती की लिए सबसे उत्तम माना जाता है। जौ की बुआई 25-30 डिग्री सेंटीग्रेट के तापमान में की जाती है। जलभराव वाले खेतों में जौ की खेती नहीं की जा सकती है।

जौ की बुआई करने से पहले खेत को अच्छी तरह से तैयार किया जाता है। सबसे पहले हैरों से खेत की जुताई करें और उसके बाद क्रास जुताई दो बार करनी चाहिये। इसके बाद पाटा लगाकर मिट्टी की भुरभुरी बनानी चाहिये। इसके बाद क्यूनालफॉस या मिभाइल पैराथियोन चूर्ण का छिड़काव करना चाहिये।

नवम्बर और दिसम्बर के महीने में पलेवा करके बुआई करनी चाहिये। बुआई करते समय किसान भाइयों को ये बात ध्यान रखनी होगी कि लाइन से लाइन की दूरी एक से डेढ़ फुट की होनी चाहिये। प्रति हेक्टेयर के लिए जौ का बीज 100 किग्रा बुआई के लिए चाहिये। देरी से बुआई करने पर किसान भाइयों को सावधानी बरतनी होती है। बीज की मात्रा 25 प्रतिशत बढ़ानी होती है तथा लाइन से लाइन की दूरी भी अधिक रखनी पड़ती है।

जौ की बुआई के बाद फसल की देखभाल ऐसे करें : -

जौ की बुआई करने के बाद अच्छी फसल लेने के लिये किसान भाइयों को खेत की हमेशा निगरानी करना चाहिये। साथ ही समय-समय पर सिंचाई, खाद का छिड़काव, रोग नाशक व की. टनाशकों का उपयोग करना होता है।आइये जानते हैं कि कब किस चीज की खेती के लिए जरूरत होती है।

बुआई के बाद सबसे पहले क्या करें : -

जौ की फसल को अच्छी पैदावार के लिए बुआई के बाद सबसे पहले खरपतवार नियंत्रण के उपाय करने चाहिये। इसके लिए किसान भाइयों को फसल की बुआई के दो दिन बाद 3.30 लीटर पैन्डीमैथालीन को 500 से 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। इसके बाद 30 से 40 दिनों की फसल हो जाये तो एक बाद खरपतवार का प्रबंधन करना चाहिये। उसके बाद 2,4 डी 72 ईसवी एक लीटर को 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कना चाहिये। यदि खेत में फ्लेरिस माइनर नाम का खरपतवार का प्रकोप अधिक दिखाई दे तो पहली बार सिंचाई करने के बाद आईसोप्रोटूरोन 1.5 किलो को 500 लीटर में मिलाकर छिड़कने से लाभ मिलता है।

सिंचाई का प्रबंधन करें : -

जौ की अच्छी पैदावार के लिए किसान भाइयों को कम से कम 5 सिंचाई करना चाहिये। किसान भाइयों को खेत की निगरानी करें और खेत की कंडीशन देखने के बाद सिंचाई का प्रबंधन करना चाहिये। पहली सिंचाई बुआई के 30 दिनों बाद करना चाहिये। इस समय पौधों की जड़ो का विकास होता है। दूसरी बार सिंचाई करने से पौधे मजबूत होते हैं और यह सिंचाई पहली सिंचाई के 10 से 15 दिन बाद करनी चाहिये। तीसरी सिंचाई फूल आने के समय करनी चाहिये।

खाद एवं उर्वरक का प्रबंधन करें : -

जो किसान भाई जौ की अच्छी फसल लेना चाहते हैं तो उन्हें खाद एवं उर्वरकों का समयानुसार उपयोग करना होगा। वैसे जौ की सिंचित व असिंचित फसल के हिसाब से खाद एवं उर्वरकों की व्यवस्था करनी होती है।

1.सिंचित फसल : - इस तरह की फसल के लिये किसान भाइयों को 60 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस और 30 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर के लिए जरूरत होती है।

2.असिंचित फसल : - इस तरह की फसल के लिए किसान भाइयों को चाहिये कि प्रति हेक्टेयर 40 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस और 30 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है।

3.- किसान भाइयों को खाद एवं उर्वरक का प्रबंधन बुआई से पहले ही शुरू हो जाती है। बुआई से पहले प्रति हेक्टेयर 7 से 10 टन गोबर या कम्पोस्ट की खाद डालनी चाहिये। इसके साथ सिंचित क्षेत्रों के लिए फास्फोरस व पोटाश 40-40 किलो खेत में डाल देनी चाहिये तथा 20 किलो नाइट्रोजन का इस्तेमाल करना चाहिये।

4. - असिंचित क्षेत्र में पूरा 40 किलो नाइट्रोजन, 30 किलो फॉस्फोरस व 30 किलो पोटाश का इस्तेमाल बुआई के समय ही करना होगा। इसके बाद पहली सिंचाई के बाद नाइट्रोजन की बची हुी मात्रा को डालना चाहिये। इससे पौधों की बढ़वार तेजी से होती है। इससे पैदावार बढ़ने में भी मदद मिलती है।

रोग की रोकथाम करना चाहिये : -

जौ की फसल में अनेक रोग भी समय-समय पर लगते हैं। जिनसे फसलें प्रभावित होतीं हैं। इसलिये किसान भाइयों को इन रोगों से फसल को बचाने के लिए अनेक उपाय करने चाहिये।

1. **पत्तों का रतुआ या भूरा रोग :** - नारंगी रंग के धब्बों वाला यह रोग जौ के पौधों की पत्तों व डंठलों पर दिखाई देता है। बाद में यह धब्बे काले रंग में तबदील हो जाते हैं। फरवरी माह के आसपास दिखाई देने वाला यह रोग तब तक बढ़ता रहता है जब तक फसल हरी होती है। इस रोग के दिखने के बाद किसान भाइयों को फसल पर 800 ग्राम डाईथेन एम-45 या डाईथेन जेड-78 को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। पहली बार में बीमारी समाप्त न हो तो 15 दिन में दूसरी बार इसी घोल का छिड़काव करें। जरूरत पड़ने पर तीसरी बार भी छिड़काव करना चाहिये।

2. **धारीदार पत्तों का रोग :** - इस रोग में जौ के पौधों के पत्तियों पर लम्बी व गहरी भूरी रंग की लाइनें पड़ जातीं हैं, या जालीनुमा पत्तियां दिखतीं हैं। रोग का प्रकोप बढ़ने पर पत्ते झुलस जाते हैं। इस रोग की शुरुआत जनवरी के अंत में होती है। इस रोग के दिखते ही किसान भाइयों को चाहिये कि 600 डाइथेन-45 को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ एक से दो बार तक छिड़काव करें

3. **पीला रतुआ :** - जौ के पौधों पर पीले रंग के धब्बे कतारों में दिखने लगते हैं। कभी कभी ये धब्बे डंठलों पर भी दिखते हैं। इस रोग के बढ़ने से बालियां भी रोगी हो जाती हैं। यह रोग जनवरी के पहले पखवाड़े में नजर आने लगता है। इससे दाने कमजोर हो जाते हैं। इस रोग के दिखने पर किसान भाइयों को डाइथैन एम-45 या डाईथेन जेड-78 के घोल का छिड़काव करना चाहिये।

4. **बंद कांगियारी व खुली कांगियारी :** - यह रोग बीजों की नस्ल से जुड़ा होता है। इस रोग से बालियों में दानों की जगह भूरा या काला चूर्ण बन जाता है। यह चूर्ण पूरी तरह से झिल्ली से ढका होता है।

इन दोनों रोगों से बचाव के लिए रोगरहित बीज का इस्तेमाल करना चाहिये या रोगरोधी किस्म के बीजों का इस्तेमाल करना चाहिये।

कीट एवं नियंत्रण : - नारंगी रंग के धब्बों वाला यह रोग जौ के पौधों की पत्तों व डंठलों पर दिखाई देता है। बाद में यह धब्बे काले रंग में तबदील हो जाते हैं। फरवरी माह के आसपास दिखाई देने वाला यह रोग तब तक बढ़ता रहता है जब तक फसल हरी होती है। इस रोग के दिखने के बाद किसान भाइयों को फसल पर 800 ग्राम डाईथेन एम-45 या डाईथेन जेड-78 को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। पहली बार में बीमारी समाप्त न हो तो 15 दिन में दूसरी बार इसी घोल का छिड़काव करें। जरूरत पड़ने पर तीसरी बार भी छिड़काव करना चाहिये।

1. **माहू कीट :** - माहू कीट जौ की पत्ती पर पाई जाती है। इससे पौधे कमजोर हो जाते हैं। बालियां नहीं निकल पातीं हैं। दाने मर जाते हैं। कीट दिखने पर पत्तियों को तोड़कर जला देना चाहिये। नाइट्रोजन खाद के इस्तेमाल से बचना चाहिये। मैलाथियान 50 ईसी का या डाइमेथेएट 30 ईसी या मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी का घोल छिड़कें।

2. अगर लेटीबग बीटल जैसे कीट दिखाई दें तो नीम अर्क 10 लीटर को 500 लीटर में मिलाकर छिड़काव करें।

3. दीमक के दिखाई देने पर क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी 3.5 लीटर प्रति हेक्टेयर इस्तेमाल करें। इनकी बांबी को खोज कर नष्ट करना चाहिये।

4. **सैनिक कीट :** - इस कीट के हमले से पूरी फसल चौपट हो जाती है। ये दूधिया दानों को चट कर जाता है। यह कीट दिन में सोता रहता है और रात में फसल को खा जाता है। इसकी रोकथाम के लिए किसान भाइयों को डाइमेथेएट 30 ईसी का घोल छिड़कना चाहिये।

जानिए चने की बुआई और देखभाल कैसे करें

चने की दाल, बेसन, हरे चने, भीगे चने, भुने चने, उबले चने, तले चने की बहुत अधिक डिमांड हमेशा रहती है। इसके अलावा चने के बेसन से नमकीन व मिठाइयां सहित अनेक व्यंजन बनने के कारण इसकी मांग दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इससे चने के दाम भी पहले की अपेक्षा में काफी अधिक हैं। किसान भाइयों के लिए चने की खेती करना फायदे का सौदा है।

कम मेहनत से अधिक पैदावार :-

चने की खेती बंजर एवं पथरीली जमीन पर भी हो जाती है। इसकी फसल के लिए सिंचाई की भी अधिक आवश्यकता नहीं होती है। न हीं किसान भाइयों को इसकी खेती के लिए अधिक मेहनत ही करनी पड़ती है लेकिन इस की खेती की निगरानी अवश्य ही अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक करनी होती है। आइये जानते हैं कि चने की बुआई किस प्रकार से की जाती है।

असिंचित क्षेत्रों में होती है अधिकांश खेती :-

रबी के सीजन की यह फसल असिंचित क्षेत्रों में अधिक की जाती है जबकि सिंचित क्षेत्रों में चने की खेती कम की जाती है। सिंचित क्षेत्र में काबुली चने की खेती अधिक की जाती है। शरदकालीन फसल होने की वजह से से इसकी खेती कम वर्षा वाले तथा हल्की ठंडक वाले क्षेत्रों में की जा सकती है। चने की खेती के लिए दोमट व मटियार भूमि सबसे उत्तम मानी जाती है लेकिन दोमट, भारी दोमट मार, मडुआ, पडुआ, पथरीली, बंजर भूमि पर भी चने की खेती की जा सकती है। काबुली चना के लिए अच्छी भूमि चाहिये। दक्षिण भारत में मटियार दोमट तथा काली मिट्टी में काबुली चने की फसल की जाती है। इस तरह की मिट्टी में नमी अधिक और लम्बे समय तक रहती है। ढेलेदार मिट्टी में भी देशी चने की फसल ली जा सकती है। इसलिये देश के सूखे पठारीय क्षेत्रों में चने की खेती अधिकता से की जाती है। चने की खेती वाली जमीन के लिए यह देखना होता है कि खेत में पानी तो नहीं भरा रहता है। जलजमाव वाले खेतों में चना की खेती नहीं की जा सकती है। ढलान वाले खेतों में भी चने की खेती की जा सकती है। खेत को तैयार करने के लिए किसान भाइयों को चाहिये कि पहली बार जुताई मिट्टी को पलटने वाले हल से करनी चाहिये। उसके बाद क्रास जुताई करके पाटा लगायें। चने की फसल के बचाव हेतु दीपक एवं कटवर्म के रोधी कीटनाशक का इस्तेमाल अंतिम जुताई के समय करें।

उस समय हैप्टाक्लोर चार प्रतिशत या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत अथवा मिथाइल पैराथियोन 2 प्रतिशत अथवा एन्डोसल्फॉन 1.5 प्रतिशत चूर्ण को 25 किलो मिट्टी में में अच्छी प्रकार से मिलाएं फिर खेत में फैला दें।

बुआई कब करें : - चने की बुआई के समय की बात करें तो उत्तर भारत में चने की बुआई नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में होती है। वैसे देश के मध्य भाग में इससे पहले भी चने की बुआई शुरू हो जाती है। सिंचित क्षेत्र में चने का बीज प्रति हेक्टेयर 60 किलो तक लगता है। काबुली चना का बीज 80 से 90 किलो प्रति हेक्टेयर लगता है तथा छोटे दानों वाली चने की किस्मों की खेती में असिंचित क्षेत्र के लिए 80 किलो तक बीज बुआई में लगता है। अधिक पैदावार लेने के लिए तथा पछैती फसल के लिए 20 से 25 प्रतिशत तक अधिक बीज का उपयोग करना होगा।

चने की खेती को अनेक प्रकार के कीट व रोग नुकसान पहुंचाते हैं। इस नुकसान से पहले चने की बुआई से पहले बीज का उपचार व शोधन करना होगा। किसान भाइयों सबसे पहले चने के बीज को फफूंदनाशी, कीटनाशी और राजोबियम कल्चर से उपचारित करें। चने की खेती को उखटा व जड़ गलन रोग से बचाव करने के लिए बीज को कार्बेन्डाजिम या मैन्कोजेब या थाइरम की 2 ग्राम से प्रतिकिलो बीज को उपचारित करें। दीपक व अन्य भूमिगत कीटों से बचाने के लिए क्लोरोपाइरीफोस 20 ईसी या एन्डोसल्फान 35 ईसी की 8 मिलीलीटर मात्रा से प्रतिकलो बीज को उपचारित करें। इसके बाद राइजोबियम कल्चर के तीन व घुलनशील फास्फोरस जीवाणु के तीन पैकेटों से बीजों को उपचारित करें। बीज को उपचारित करने के लिए 250 ग्राम गुड़ को एक लीटर पानी में गर्म करके घोले और उसमें राइजोबियम कल्चर व फास्फोरस के घुलनशील जीवाणु को अच्छी प्रकार से मिलाकर बीज उपचारित करें। उपचार करने के बाद बीजों को छाया में सुखायें।

किसान भाई चने की बुआई करते समय पौधों का अनुपात सही रखें तो फसल अच्छी होगी। अधिक व कम पौधों से फसल प्रभावित हो सकती है। सही अनुपात के लिए बीज की लाइन से लाइन की दूरी एक से डेढ़ फुट की होनी चाहिये तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर होनी चाहिये। बारानी फसल के लिए बीज की गहराई 7 से 10 सेंटीमीटर अच्छी मानी जाती है और सिंचित क्षेत्र के लिए ये गहराई 5 से 7 सेंटी मीटर ही अच्छी मानी जाती है।

चने की खेती की देखभाल कैसे करें: - सबसे पहले किसान भाइयों को चने की खेती की बुआई के बाद खरपतवार नियंत्रण पर ध्यान देना होगा क्योंकि खरपतवार से 60 प्रतिशत तक फसल खराब हो सकती है। बुआई के तीन दिन बाद खरपतवार नाशी डालें। उसके 10 दिन बाद फिर खेत का निरीक्षण करें यदि खरपतवार दिखता है तो उसकी निराई गुड़ाई करें। इस दौरान पौधों की उचित दूरी का अनुपात भी सही कर लें। अधिक घने पौधे हों तो पौधों को निकालकर उचित दूरी बना लें। साथ ही गुड़ाई कर लें ताकि चने के पौधों की जड़ें मजबूत हो जायें।

सिंचाई प्रबंधन : - चने की फसल का अधिक पानी भी दुश्मन होता है। अधिक पानी से पौधों की बढ़वार अधिक लम्बी हो जाती है, जिससे चने कम आते हैं और हवा आदि से पेड़ गिरकर नष्ट भी हो जाते हैं। इसके अलावा खेत में यदि पानी भरता हो तो बरसात होने के समय सावधानी बरतें और जितनी जल्दी हो सके पानी को खेत से निकालें। चने की फसल में बहुत जरूरत होने पर एक सिंचाई कर दें। यदि वर्षा हो जाये तब जमीन की नमी को परखें उसके बाद ही सिंचाई करें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन : - आम तौर पर चने की खेती के लिए 40 किलो फास्फोरस, 20 किलो पोटाश, 20 किलो गंधक, 20 किलो नाइट्रोजन का इस्तेमाल किया जाता है। जिन क्षेत्रों की मिट्टी में बोरान अथवा मोलिब्डेनम की मात्रा कम हो तो वहां पर किसान भाइयों को 10 किलोग्राम बोरेक्स पाउडर या एक किलो अमोनियम मोलिब्डेट का इस्तेमाल करना चाहिये। असिंचित क्षेत्रों में नमी में कमी की स्थिति में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव फली बनने के समय करें।

कीट नियंत्रण के उपाय करें : - चने की फसल में मुख्य रूप से फली छेदक कीट लगता है। पछैती फसलों में इसका प्रकोप अधिक होता है। इसके नियंत्रण के लिए इण्डेक्सोकार्ब, स्पाइनोसैड, इमामेक्टीन बेन्जोएट में से किसी एक का छिड़काव करें। नीम की निबौली के सत का भी प्रयोग कर सकते हैं। इसके अलावा दीमक, अर्द्धकुण्डलीकार, सेमी लूपर कीट लगते हैं। इनका उपचार समय रहते करना चाहिये।

रोग एवं रोकथाम : -

1.चने की खेती में उकठा या उकड़ा रोग लगता है। यह एक तरह का फफूंद है और यह मिट्टी या बीज से जुड़ी बीमारी है। इस बीमारी से पौधे मरने लगते हैं। इससे बचाव के लिए समय पर बुआई करें। बीज को गहराई में बोयें।

2.ड्राई रूट रॉट का रोग मिट्टी जनित रोग है। इइस बीमारी के प्रकोप से पौधों की जड़ें अविकसित एवं काली होकर सड़ने और टूट जाती है। इस तरह से पूरा पौधा ही नष्ट हो जाता है। बाद में पौधा भूसे के रूप में बदल जाता है।

3.कॉलर रॉट रोग से पौधे पीले होकर मर जाते हैं। यह रोग बुआई के डेढ़ माह बाद ही लगना शुरू हो जाता है। कांबूडाजिम के या बेनोमिल के घोल से छिड़काव करें।

इसके अलावा चांदनी, धूसर फफूंद, हरदा रोग, स्टेम फिलियम ब्लाइट, मोजेक बौना रोग चने की फसल को नुकसान पहुंचाती है।

जानिए कैसे करें बरसीम, जई और रिजिका की बुआई

पशुओं को पौष्टिक आहार देने के लिए हरे चारे की जरूरत होती है। हरे चारे के लिए बरसीम, जई और रिजिका की खेती बहुत ही फायदे वाली है। बरसीम के शुष्क पदार्थ में पाचनशीलता 70 प्रतिशत होती है तथा 20 प्रतिशत प्रोटीन होता है। बरसीम की तरह जई भी रबी के मौसम का एक गैर दलहनी पौष्टिक चारा है। दुग्ध उत्पादन के लिए लाभप्रद है। यह पशुओं को भरपेट खिलाई जा सकती है। बरसीम, जई के अलावा रिजका भी रबी में उगाई जाने वाली फलीदार चारे की सिंचित फसल है। इसमें प्रोटीन 15 प्रतिशत होता है। आइये जानते हैं कि बरसीम, जई और रिजका की खेती किस प्रकार की जाती है।

बरसीम की बुआई कैसे करें : -

दोमट व जलसोखन की अधिक क्षमता वाली जमीन में बरसीम की खेती अच्छी पैदावार देती है। इसकी खेती के लिए अधिक सिंचाई की जरूरत होती है। बरसीम की बुआई के लिए गहरी जुताई कर भुरभुरी मिट्टी वाला खेत होना चाहिये। एक हेक्टेयर में 20 क्यारियां बनाकर बुआई करना चाहिये। इससे सिंचाई में सुविधा होती है। बरसीम की अच्छी उपज लेने के लिए गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट खाद 10 टन तथा 20किलो नाइट्रोजन, 60 किलो फास्फोरस और 20 किलो पोटाश बुआई से पूर्व खेत में बिखेरनी चाहिये। प्रत्येक हेक्टेयर में 20 से 25 किलो बीज आवश्यक होता है। बुआई से पहले बीज का 5 प्रतिशत नमक के घोल वाले पानी में डुबानाचाहिये। हल्के तैरने वाले बीज को निकाल देना चाहिये। उसके बाद बीजों को एक ग्राम कार्बनडेजिम्दो ग्राम थायरम नामक फफूंद नाशक दावा मिलाकर उपचारित करना चाहिये। इसके बाद राइजोबियम कल्चर से बीज उपचारित करें। इसके बाद बुआई करें। बुआई का समय अक्टूबर से नवंबर तक सर्वोत्तम माना जाता है। बुआई में देरी होने पर कटाई की संख्या कम हो जाती है।

दो तरीके से बरसीम की बुआई की जाती है : -

1. खेत में बनी क्यारियों में पानी भरे और उपचारित बीज को समान से छिटक कर बुआई करें। किसान भाई ध्यान रखें कि खेत में पानी की सतह 5 सेमी से कम ही रहें।
2. दूसरी विधि में खेत में बनी क्यारियों में उपचारित बीज को छिटक दें और उसके बाद सिंचाई कर दें। सिंचाई करते वक्त इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि पानी की धार तेज न हो वरना सारा बीज बहकर एक जगह पर इकट्ठा हो जायेगा।

बरसीम की फसल पहली सिंचाई बुआई के 5-6 दिनों बाद ही की जानी चाहिये। इसके बाद प्रत्येक 15 दिनों बाद सिंचाई करनी चाहिये। पहली कटाई 50 दिन के बाद करनी चाहिये। उसके बाद प्रत्येक 20 से 25 दिन के अन्तर पर कटाई करते रहें। इसके बाद प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई करनी जरूरी होती है।

पशु चारे के रूप में जई की बुआई कैसे करें : -

जई को मटर, बरसीम, लुसर्न के साथ बुआई करने से बहुत लाभ होता है। जई की खेती के लिए दोमट भूमि, बलुई दोमट, मटियारी दोमट मिट्टी सबसे उत्तम बताई गई है। खरीफ की फसल में खाली छोड़े गये खेत में जई की खेती अच्छी तरह से होती है। इसके लिए खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा उसके बाद देशी हल से तीन से चार बार की जुताई की जानी चाहिये। फिर पाटा लगाया जाना चाहिये। जिससे खेत में ढेले व जड़ें न रहें। आखिरी जुताई करते समय खेत में 60 किलो नाइट्रोजन 40 किलो फास्फोरस डालकर मिट्टी में अच्छी तरह से मिला देना चाहिये। नाइट्रोजन की तीन बराबर मात्रा बना लेनी चाहिये। एक जुताई के समय और दो 20-20 किलो की मात्रा को बुआई के 20-25 दिन के बाद पहली सिंचाई के साथ देना चाहिये। दूसरी बार उस समय नाइट्रोजन की मात्रा डालनी चाहिये जब दूसरी बार चारे की कटाई कर लें। वैसे तो जई की बुआई का सही समय अक्टूबर का प्रथम सप्ताह माना जाता है लेकिन इसकी बुआई दिसम्बर तक की जा सकती है। लाइन से लाइन की दूरी कम से कम 20 सेमी रहनी चाहिये। खेत में नमी कुछ कम दिखाई पड़ रही हो तो बांस के पोरे से बुआई करनी चाहिये ताकि बीज गहराई तक जा सके। उसके बाद क्यारियां बना लें।

जई की बुआई के एक माह बाद पहली सिंचाई करनी चाहिये। खेत में पानी बहुत न भरें और एक माह के अंतराल से सिंचाई करते रहें। वैसे जई की फसल को एक बार ही काटा जाता है लेकिन खेत की उर्वरा शक्ति अच्छी हो और फसल अच्छी दिख रही हो तो इसे दो बार भी काटा जा सकता है। पहली बार उस समय कटाई की जा सकती है जब पौधे 60 सेमी ऊंचे हो जायें। दो माह बाद भी कटाई की जा सकती है। पौधों की कटाई 6-7 सेमी की ऊंचाई से कर लेनी चाहिये। जनवरी से मार्च तक चारा खिलाया जा सकता है।

रिजका की बुआई किस प्रकार की जाती है : -

रिजका रबी में पैदा की जाने वाले फलीदार चारे की फसल है। एक बार बोने के बाद लगभग 3 से 4 वर्ष तक यह पैदावार देती रहती है। रिजका की बुआई से किसान को दोहरा लाभ मिलता है। पहला यह कि पशुओं को हरा चारा मिलता है दूसरा यह कि इसकी जड़ों को खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। रिजका में प्रोटीनकी मात्रा 15 प्रतिशत अधिक है। इसलिये रिजिका को ज्वार, बाजरा, जई, जौ, सरसो, शलजम आदि के साथ मिक्स कर पशुओं को खिलाना चाहिये। 27 डिग्री तापमान में होने वाली रिजका की फसल दोमट मिट्टी के अलावा रेतीली दोमट, चिकनी दोमट मिट्टी में उगाई जा सकती है। क्षारीय भूमि में इसकी खेती नहीं की जा सकती है। रिजका की अच्छी फसल लेने के लिए एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करें उसके बाद देशी हल या हैरों से दो तीन जुताई करें। जब मिट्टी भुरभुरी हो जाये तब खेत में क्यारियां बनायें। रिजका की अकेली फसल के लिए प्रत्येक हेक्टेयर के लिए 20 से 25 किलो बीज की जरूरत होती है। इसकी बुआई लाइन से लाइन की दूरी 25 सेन्टीमीटर रखकर की जा सकती है।

इसकी बुआई सीड ड्रिल से भी की जा सकती है और छिटका कर भी बुआई होती है। अधिक चारा प्राप्त करने के लिए रिजका के साथ दो किलो सरसो और 12 किलो मैथी व 3 किलो चाइनीज कैबेज यानी जापानी सरसों की बुआई करनी चाहिये। बुआई से पहले बीज का उपचार व शोधन करना चाहिये। रिजका की बुआई नवम्बर के मध्य में की जानी चाहिये। इसके बीजों का छिलका काफी कड़ा होता है। इसलिये बीजों को 8 घंटें तक पानी में भिगो कर रखना चाहिये उसके बार राइजोबियम कल्चर मिलाकर बुआई करें। रिजका की अच्छी खेती के लिए शुरुआत में बढ़वार के लिए जैविक खाद के साथ 20 से 30 किलो नाइट्रोजन , 100 किलो फास्फोरस तबा 30 किलो पोटाश डालनी चाहिये। नाइट्रोजन की आधी मात्रा अंतिम जुताई के समय डाली जानी चाहिये। बाकी आधी मात्रा को तीन बराबर हिस्से बनाकर प्रत्येक दूसरी कटाई के बाद छिटकना चाहिये। रिजका की फसल को बरसीम की अपेक्षा कम सिंचाई की जरूरत होती है। पौध निकलने के बाद हल्की सिंचाई करें। हल्की मिट्टी में सर्दियों के मौसम में 10 से 12 दिन के अन्तर में सिंचाई करें। गर्मियों में 5 से 7 दिन में सिंचाई करें। रिजका में मोयला और मृदु आसिल रोमिता का प्रकोप होता है। इससे बचाव के उपाय करें। इस फसल से दिसम्बर से जुलाई तक चारा मिलता रहता है। पहली कटाई बुआई के 60 दिन के बाद करनी चाहिये। अगली कटाई पौधे की बढ़वार के अनुसार एक माह के अन्तर में करते रहें। मार्च के बाद कटाई 10 प्रतिशत फूल आने पर ही करें।

ठण्ड में दुधारू पशुओं की देखभाल कैसे करें

पशुपालन किसानों का सहायक व्यवसाय है। कृषि में मशीनी युग आने के बाद दुधारू पशुओं के पालन का कार्य किया जा रहा है। इन दुधारू पशुओं के पालने से किसानों को काफी आय प्राप्त होती है। सर्दियों में दुग्ध उत्पादन और पशुओं की सेहत दुरुस्त रखने के लिए कुछ खास इंतजाम करने होते हैं और कुछ सावधानिएं भी बरतनी होतीं हैं। आइये जानते हैं कि किसान भाइयों को कौन-कौन सी सावधानियां बरतनी होतीं हैं और कौन कौन से उपाय करने होते हैं।

सर्दियों के आने से पहले ही करें इंतजाम : -

जिस प्रकार से आम आदमी सर्दियों से बचाव करने के लिए अनेक उपाय करता है उसी प्रकार से किसानों को अपने पशुओं को सर्दी से बचाने का इंतजाम करना होता है। पशुपालक भाइयों को अपने दुधारू पशु गाय, भैंस, बकरी आदि को सर्दी के प्रकोप से बचाने के लिए उनके खाने पीने की खुराक और उनके रहने के स्थान पशुशाला पर विशेष ध्यान देना चाहिये। जिससे वो स्वस्थ रहें और दुग्ध उत्पादन भी कम न हो पाए।

पशुपालक इस तरह करें पशुओ की देखरेख का प्रबंधन : -

सर्दियों में पशुओं की तीन प्रकार से देखभाल की जाती है। जो इस प्रकार हैं:-

1.आवास प्रबंधन
2.आहार प्रबंधन
3.स्वास्थ्य प्रबंधन

आवास प्रबंधन : -

1.सर्दियों में पशुओं को बर्फीली हवाओं से बचाने के लिए रात के समय खुले में न बांधें। सर्दियों में वर्षा या ओलावृष्टि और धुंध के समय पशुओं को बंद स्थानों पर ही रखें।

2.पशुओं को बर्फीली हवाओं से बचाने के लिए पशुशाला के रोशनदान, दरवाजों, खिड़कियों को टाट-बोरा से बंद करें। इसके अलावा ज्वार-बाजरा आदि के सूखे पेड़ों की टटिया बनाकर भी इन्हें बंद कर सकते हैं।

3.पशुशाला में गोबर व मूत्र के निकास की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिये। ताकि वहां पर पानी न भरे और सीलन आदि भी न हो।
4.पशुशाला में ऐसी व्यवस्था करें कि सर्दियों के दिन में धूप अधिक से अधिक समय तक रहे। सीलन या नमी से बचाव के उपाय करने चाहिये।
5.पशुओं को बैठने के लिए पुआल का बिछावन डालें। ताकि पशुओं पर जमीन की नमी का असर न पड़े।
6.पशुओं को शरीर ढकने के लिए जूट के बोरे की झूल ऐसे पहनाएं ताकि उनके शरीर से खिसके नहीं।
7.गर्भित पशु का विशेष ध्यान रखें और उसे सर्दियों से बचाने के लिए ढंके हुए स्थान पर बिछावन पर रखें।
8.बिछावन को समय समय पर बदलते रहें ताकि मूत्र या जमीन की नमी से पशु को सर्दी न लग सके।
9.रात के समय पशुओं को पशुशाला में रखें और धूप निकलने पर पशुओं को धूप में बांधें। धूप लगने से उनके शरीर का रक्त संचार बढ़ता है, जिससे पशुओं में रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है तथा दुग्ध उत्पादन की वृद्धि में भी मदद मिलती है।

आहार प्रबंधन : -

सर्दियों में पशुओं को संतुलित आहार देने से जहां पशुओं का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, बीमारियों से दूर रहता है। वहीं दुग्ध उत्पादन में भी वृद्धि होती है।

1.हरे चारे के साथ संतुलित आहार नियमित रूप से कम से कम एक दिन में तीन बार दिया जाना चाहिये।
2.संतुलित आहार किस प्रकार बनायें: 100 किलो संतुलित आहार बनाने का फार्मूला इस प्रकार है:-

1.जौ,गेहूं, मक्का, बाजरा व जई का दलिया 26 किलो
2.सरसों, बिनौला व मूंगफली की खली 40 किलो
3.चोकर व दाल चूरी 26 किलो
4.साधा नमक ढेले वाला 6 किलो
5.खनिज लवण 2 किलो
इन सबको पीस कर अच्छी तरह मिलायें और पशुओं को नियमित रूप से दें।

इस आहार को अपने दुग्ध उत्पादक पशुओं को किस हिसाब से दें। इस बारे में विशेषज्ञों की राय इस प्रकार है :-

1.ढाई लीटर दूध देने वाली भैंस को एक किलो आहार दें।
2.तीन लीटर दूध देने वाली गाय को भी एक किलो आहार दें। इसी अनुपात में गायों व भैंसों का आहार बढ़ाते जायें।
3.इसके अलावा एक से डेढ़ किलो प्रतिलीटर दूध के हिसाब से अतिरिक्त आहार प्रतिदिन देना चाहिये। इससे पशुओं की सर्दी से बचाव में बहुत अधिक मदद मिलती है।
4.पुष्टाहार के साथ ही पशुओं के पीने के पानी का भी विशेष प्रबंध करना चाहिये। सर्दियों में पोखर, तालाब या टैंक में भरा हुआ बासी पानी पिलाने से बचना चाहिये।
5.सर्दियों में कम पानी पिलाने से भी पशु के स्वास्थ्य और दुग्ध उत्पादन क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। पशु विशेषज्ञों की राय के अनुसार 24 घंटे में कम से कम 3 बार ताजा व स्वच्छ पानी अवश्य पिलाना चाहिये।

शिशुओं व गर्भित पशुओं के लिए बरतें सावधानियां : -

1.नवजात शिशुओं को खीस जरूर पिलाएं, इससे उनका इम्यून सिस्टम तगड़ा होता है और वे बीमार नहीं पड़ते हैं। 12 घंटे में कम से कम तीन बार खीस पिलाएं।
2.ब्याने वाले पशुओं को गुनगुना पानी दें, ठंडा पानी देने से बचें।
3.पशु के शिशुओं को सूखा चारा दें, धूप-छांव की व्यवस्था में विशेष देखभाल करें।

स्वास्थ्य प्रबंधन : -

पशुओं को सर्दियों से बचाने के लिए स्वास्थ्य का प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है। सर्दियों के आने से पहले पशुओं के आवास व खान-पान की व्यवस्था अच्छी कर लेनी चाहिये।

1.सबसे अधिक देखभाल पशुओं के शिशुओं की करनी होती है।
2.शिशुओं की देखभाल गर्भकाल से ही करें तो उत्तम होगा। ब्याने से पहले गाय व भैंस को ए, डी, ई विटामिन का इंजेक्शन लगवाना चाहिये।
3.ब्याने के बाद बच्चे की नाल को 4 इंच काट कर उसे रोगरोधक दवा से धो देना चाहिये तथा इस तरह 4 दिन तक साफ सफाई करते रहना चाहिये ताकि पक न पावे और घाव न बने।
4.ब्याने के बाद बच्चे की मालिश करके उसकी मां के सामने चाटने के लिए रखें।
5.शिशु को तत्काल खीस पिलाना चाहिये। उसके खड़े होने का इंतजार नहीं करना चाहिये। 12 घंटे में दो से तीन बाद खीस पिलायें।
6.सर्दी से जैसे आप अपने शिशु को बचाते हैं उसी प्रकार इन शिशुओं को खास कर छह माह के शिशुओं का विशेष ध्यान रखें वरना उन्हें निमोनिया हो सकता है।

7.दस दिन बाद पशुओं के शिशुओं को पेट के कीड़े मारने वाली दवा दें तथा उनके खान पान में दूध के अलावा अन्य चीजें शामिल करें।
8.इसी तरह स्वस्थ पशुओं की सर्दियों में देखभाल करें। कंपकपी आने पर सतर्क हो जायें तथा चिकित्सक से सम्पर्क करें और उपचार करायें क्योंकि ये बुखार आने के लक्षण होते हैं। लापरवाही करने से निमोनिया तक हो सकता है।
9.पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए शाम के समय पशुशाला में अलाव जलायें। अलाव जलाते समय विशेष सावधानी बरतें। अलाव ऐसे स्थान पर जलायें जो पशु की पहुंच से दूर हो। इसके लिए पशु की रस्सी छोटी रखें।

सर्दियों में जरा सी लापरवाही पड़ सकती है महंगी : -

1.पशुओं को सर्दी लगने से पशुपालकों को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।
2.पशुओं को एक बार सर्दी लगने से पशुपालकों को दोहरा नुकसान उठाना पड़ता है। एक तो उसका दुग्ध उत्पादन प्रभावित होता है। दूसरा उसके स्वास्थ्य खराब होने के कारण उसके इलाज में पैसा खर्च करना पड़ता है।
3.गाय-भैंस और बकरी के छोटे बच्चों पर सर्दी का सबसे अधिक असर होता है। इनके प्रति जरा सी लापरवाही भारी पड़ सकती है। इनका बचाव विशेष रूप से करें
4.कई बार पशुओं के बच्चे सर्दी की चपेट में आने से निमोनिया रोग के शिकार हो जाते है उनको बचाना भी मुश्किल हो जाता है।

गाजर की खेती: लाखों कमा रहे किसान

गाजर एक जड़ वाली फसल है इसके लिए अगस्त से ही खेतों की तैयारी शुरू हो जाती है, गाजर सेहत से भरपूर तो होती ही है ये किसान के लिए अच्छी आमदनी वाली फसल भी है. इसका जूस हमारे शरीर को कई विटामिन्स देते है. कहते तो ये हैं की अगर इसका जूस बच्चों को पिलाने से उनकी आँखों की रोशनी बढ़ती है और उनका चश्मा हट जाता है. गाजर को हम कई तरह से प्रयोग में लाते हैं जैसेः गाजर का अचार, सलाद , सब्जी और जूस, हलवा इत्यादि। हलवा तो सर्दियों की मशहूर मिठाई होती है जो की घरों में भी बनाई जाती है. गाजर का मुरब्बा भी प्रयोग में लाया जाता है.

जमीन का चुनाव : -

गाजर या जड़ वाली किसी भी फसल के लिए हलकी और भुरभुरी मिटटी की आवश्यकता होती है इसके लिए खेत को अच्छे से जुताई करके जब तक की उस खेत से पैदल निकलना मुश्किल न हो जाये तब तक जुताई की जनि चाहिए और उसमे गोबर का खाद डाल के मिक्स कर देना चाहिए फिर उसमे झोरा (एक प्रकार की मेंड़) बना के उसके ऊपर इसकी बुवाई करनी चाहिए. वैसे तो सामान्य खेत में भी इसकी खेती होती है लेकिन झोरा बनाने से इसके फसल को बढ़ने के लिए मुफीद माहौल मिलता है तथा पानी की मात्रा भी हलकी रखी जाती है इससे गाजर की लम्बाई और मोटाई में मिटटी बाधक नहीं होती क्यों की झोरा की मिटटी पर ऊपर पानी नहीं चढ़ता तो वो मिटटी हल्की गीली रहती है तथा गाजर को नमी मिलती रहती है. जब किसान फसल की खुदाई करता है तो उसको साबुत और लम्बी गाजर मिल जाती है जबकि सामान्य खेत में फसल करने से खुदाई करते समय उसके टूटने के डर रहता है.

लगाने का समय : -

इसको लगाने का समय अगस्त में शुरू हो जाता है तथा इसको अक्टूबर, नवम्बर तक लगाया जाता है. ये सर्दियों की सब्जी है तो इसको लगाने का समय भी वही है. सामान्य गाजर को स्टोर नहीं किया जाता है तथा गाजर की जिस किस्म को स्टोर किया जाता है उसको पावर करेंट बोला जाता है इसकी जानकारी भी आपको नीचे मिलेगी.

गाजर की किस्में : -

गाजर को सामान्यतः दो किस्मों में बांटा जाता है यूरोपियन एवं एशियन. जैसा की नाम से ही पता चल रहा है यूरोपियन ज्यादा तापमान नहीं सह पाती है जबकि एशियन थोड़ा तापमान ज्यादा हो तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता.

एशियन किस्में : -

पूसा मेघाली, गाजर नं- 29, पूसा केशर, हिसार गैरिक, हिसार रसीली, हिसार मधुर, चयन नं- 223, पूसा रुधिर, पूसा आंसिता और पूसा जमदग्नि आदि प्रमुख किस्में है. एशियन किस्में, तापमान भी सहन कर जाती हैं तभी इनकी बुबाई अगस्त में शुरू कर दी जाती है तथा अक्टूबर तक की जाती है. ये लाल रंग की चमकदार और लम्बी गाजर होती है.

यूरोपियन किस्में : -

इसकी जड़े सिलैंडरीकल, मध्यम लम्बी, पुंछनुमा सिरेवाली और गहरे संतरी रंग की होती हैद्य इनकी औसत उपज 250 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है. इन किस्मों को ठण्डे तापमान की आवश्यकता होती है. यह किस्में गर्मी सहन नहीं कर पाती हैद्य इसकी प्रमुख किस्में- नैन्टीज, पूसा यमदाग्नि, चौन्टने आदि है.

किस्मों की खासियत और उपज : -

नैनटिस-

इस किस्म का उपरी भाग छोटा तथा हरी पत्तियों वाला होता है। इस किस्म कि जड़ें बेलनाकार और नारंगी रंग की होती हैद्य जिनका अगला सिरा छोटा पतला होता हैद्य यह एक अच्छी गंध वाली, दानेदार मुलायल एवं मीठी किस्म हैद्य यह खाने में अत्यंत स्वादिष्ट लगती है.

पूसा मेघाली-

इसकी जड़े गोलाकार, लम्बी, नारंगी रंग के गूदे और कैरोटीन की अधिक मात्रा वाली होती हैद्य इसकी अगेती बुवाई अगस्त से सितम्बर में की जाती है, इसकी बुवाई अक्टूबर तक कर सकते है.

गाजर नं 29 -

यह शीघ्र तैयार होने वाली किस्म हैद्य इसकी जड़े लम्बी बढ़ने वाली और हल्की लाल रंग की होती हैद्य इसकी औसत पैदावार 200 से 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है.

चौंटनी -

इस किस्म कि गाजरें मोटी तथा गहरे लाल नारंगी रंग कि होती हैद्य यह किस्म बोने के 75 से 90 दिनों बाद तैयार हो जाती हैद्य इस किस्म का बीज मैदानी क्षेत्रों में तैयार किया जा सकता हैद्य यह प्रति हेक्टेयर 150 क्विंटल तक पैदावार देती है।

पूसा केशर – यह एक अकेली देशी किस्म हैद्य इस किस्म के पत्तों का समूह छोटा होता है.

हिसार गेरिक – इसकी जड़े लम्बी व संतरी रंग की है और इसकी पैदावार भी अच्छी होती है.

हिसार रसीली (संशोधित) – इस किस्म की गाजर 30 से 35 सेंटीमीटर लम्बी, पतली व आकर्षक लाल रंग, मध्य भाग का रंग हल्का लाल आकर्षक रंग के कारण ग्राहक की रुचि तथा उच्च उत्पादन के कारण कृषकों की पहली पसन्द होती है क्योकि चमकदार होने की वजह से इसके रेट भी अच्छे मिल जाते हैं.

हिसार मधुर (संशोधित) – यह गाजर की नवीन किस्म हैद्य औसतन गाजर की लम्बाई 25 से 30 सेंटीमीटर तथा गहरा लाल रंग या हल्की श्यामल झलक कैरोटीन की मात्रा 90 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम होती हैद्य शाखाएँ नही निकलती है, गाजर का व्यास 2.5 से 3.0 सेंटीमीटर होता है।

चयन नं 223 – यह एशियाई किस्म है किन्तु यह यूरोपियन किस्म नेन्टस के समान गुणों का प्रदर्शन करती हैद्य यह फसल बोने के 90 दिन बाद तैयार हो जाती है तथा खेत में 90 दिनों तक अच्छी दशा में रहती हैद्य इसकी जड़ें नारंगी रंग कि 15 से 18 सेंटीमीटर लम्बी और मीठी होती हैद्य इसे देर से भी बोया जा सकता हैद्य यह प्रति हेक्टेयर 200 से 300 क्विंटल तक पैदावार दे देती है.

पूसा जमदग्नि –इस किस्म की जड़ें देश के अलग-अलग भागों में 85 से 130 दिनों में तैयार हो जाती हैद्य हरी पत्तियों वाला उपरी वाला भाग मंझौला होता है. इसका मध्य भाग तथा गुदा केसरिया रंग का होता है. इसका तना सुगन्धित होता है तथा खाने में बहुत स्वादिष्ट होता है.

पूसा रुधिर –यह लम्बी और लाल रंग की होती है. इसका फल थोड़ा पतला और लम्बा होता है.

पूसा आंसिता – यह लम्बी और काला रंग लिए होती है.

पूसा नयनज्योति – यह गाजर सामान्य गाजर होती है इसको ज्यादा देखभाल की भी जरूरत नहीं होती और इसकी पैदावार भी अच्छी होती है।

सामान्यत : – सभी किस्मों का समय 100 से 120 के बीच होता है. और इसकी खेती के लिए कम सिंचाई की जरूरत होती है तथा पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए. इसकी खेती सामान्य खेत की तरह भी की जा सकती है तथा इसकी खेती झोरा बनके भी की जा सकती है. गाजर का कोई विशेष रोग नहीं होता लेकिन जो भी कीट लगता है उसका उपचार भी किसान भाई प्राकृतिक तरीके से कर लेते हैं. इसमें किसान भाई गोबर का खाद इसके खेत को तैयार करते समय ही मिला लेते है जो की जुताई के साथ ही खेत में मिल जाता है, तो इसमें विशेष रासायनिक खाद भी देने की जरूरत नहीं पड़ती है.

किसान भाई इसकी कोई भी जानकारी चाहते हैं तो हमें नीचे कमेंट बॉक्स में सवाल पूछ सकते हैं. उनको सारी जानकारी दी जाएगी.

भिंडी की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

सब्जियों में भिंडी का प्रमुख स्थान है। ये सब्जी बहुत सारे पोषक तत्वों से भरपूर सब्जी है। इसको लोग लेडी फिंगर या ओकारा के नाम से भी जानते हैं। भिंडी में मुख्य रूप से प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवणों जैसे कैल्शियम, फास्फोरस के अतिरिक्त विटामिन 'ए', बी, 'सी', थाईमीन एवं रिबोफ्लेविन भी पाया जाता है। इसमें विटामिन ए तथा सी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। भिंडी के फल में आयोडीन की मात्रा अधिक होती है तथा भिंडी की सब्जी कब्ज रोगी के लिए विशेष गुणकारी होती है। भिंडी को कई तरह से बनाया जाता है जैसे सूखी भिंडी, आलू के साथ, प्याज के साथ इत्यादि द्य भिंडी को किसी भी तरह की मिट्टी में उगाया जा सकता है। भिंडी की खेती पूरे देश में की जाती है। विश्व में भारत का भिंडी उत्पादन में पहला स्थान है।

भिंडी के लिए खेत की तैयारी : – भिंडी को लगाने के लिए खेत को हैरो से कम से कम दो बार गहरी जुताई करके पाटा लगा देना चाहिए जिससे की खेत समतल हो जाये। इसके बाद उसमे गोबर की बनी हुई खाद डाल के मिला देना चाहिए. खेत की मिट्टी भुरभुरी और पर्याप्त नमी वाली होनी चाहिए।

खेती के लिए मौसम : – भिंडी की खेती के लिए उपयुक्त तापमान 17 से 25 डिग्री के बीच होना चाहिए। ये इसके बीज को अंकुरित करने के लिए बहुत अच्छा होता है. हालाँकि इससे ज्यादा तापमान पर भी बीज अंकुरित होता है। लेकिन 17 डिग्री से नीचे का तापमान होने पर बीज अंकुरित होने में दिक्कत होती है। भिंडी के लिए थोड़ा गर्म और नमी वाला मौसम ज्यादा सही रहता है। ठन्डे तापमान पर भिंडी को नहीं उगाया जा सकता है।

भिंडी की बुवाई का समय : – भिंडी को साल में दो बार उगाया जाता है द्य फरवरी-मार्च तथा जून-जुलाई में। अगर आपको भिंडी की फसल को व्यावसायिक रूप देना है तो आप इस तरह से इसको लगाएं की हर तीसरे सप्ताह में आप भिंडी लगाते रहें। ये प्रक्रिया आप फरवरी से जुलाई या अगस्त तक कर सकते हैं इससे आपको एक अंतराल के बाद भिंडी की फसल मिलती रहेगी।

भिंडी का बीज कितने दिन में अंकुरित होता है: -

जब आप भिंडी को खेत में पर्याप्त नमी के साथ लगाते हैं तो इस बीज को अंकुरित होने में 7 से 10 दिन का समय लगता है। इसका समय कम या ज्यादा मौसम, बीज की गुणवत्ता ,जमीन उपजाऊ शक्ति, बीज की गहराई आदि पर निर्भर करता है।

भिंडी की अगेती खेती कैसे करें : -

गर्मी में भिंडी की बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 40-50 सेमी एवं कतार में पौधे से पौधे की दूरी 20-25 सेमी रखनी चाहिए जिससे कि पौधे को फैलने के लिए पर्याप्त जगह मिल सके। बीज की 2 से 3 सेमी गहरी बुआई करें। बुवाई से पहले बीजों को 3 ग्राम मेन्कोजेब कार्बेन्डा. जिम प्रति किलो के हिसाब से उपचारित करना चाहिए।

भिंडी की उन्नत किस्में : -

1.पूसा ए-4: यह भिंडी की अच्छी एवं एक उन्नत किस्म है। जैसा कि नाम से ही पता चल रहा है यह प्रजाति 1995 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान , नई दिल्ली (पूसा) द्वारा निकाली गई है। यह एफिड तथा जैसिड के प्रति सहनशील है। एफिड (माहु) एक छोटे आकर का कीट होता है ये कीड़े पत्तियों का रस चूसते हैं।

जेसिड (हरा मच्छर/फुदका) लक्षण : इस कीट के निम्फ (शिशु कीट) और प्रौढ (बड़ा कीट) दोनों ही अवस्था फसल को क्षति पहुँचाते हैं। यह कीट पौधों के कोमल तनों, पत्ती एवं पुष्प भागों से रस चूसकर पौधों का विकास रोक देते हैं। यह पीतरोग यैलो वेन मोजैक विषाणु रोधी है। फल मध्यम आकार के गहरे, कम लस वाले, 12-15 सेमी लंबे तथा आकर्षक होते हैं। बोने के लगभग 15 दिन बाद से फल आना शुरू हो जाते है तथा पहली तुड़ाई 45 दिनों बाद शुरु हो जाती है। इसकी औसत पैदावार ग्रीष्म में 10 टन व खरीफ में 12 टन प्रति एकड़ है।

2.परभानी क्रान्ति : यह प्रजाति 1985 में मराठवाड़ाई कृषि विश्वविद्यालय, परभनी द्वारा निकाली गई है। इसमें ५० दिन में फल आना शुरू हो जाता है।

3.पंजाब-7 : यह प्रजाति पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा निकाली गई है।

4.अर्का अभय : यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा निकाली गई हैं।

5.अर्का अनामिका : यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा निकाली गई हैं।

6.वर्षा उपहार : जैसा नाम से विदित हो रहा है ये प्रजाति वर्षा ऋतू में सर्वाधिक उत्पादन देती है तथा इस किस्म को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा विकसित किया गया है।

7.हिसार उन्नत : इस किस्म को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा विकसित किया गया है।

8.वी.आर.ओ.-6 : यह प्रजाति भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा 2003 में निकाली गई हैं। इसको काशी प्रगति के नाम से भी जाना जाता है।

भिंडी बीज की जानकारी : -

सिंचित अवस्था में 2.5 से 3 किग्रा तथा असिंचित अवस्था में 5-7 किग्रा प्रति हेक्टेअर की आवश्यकता होती है। संकर किस्मों के लिए 5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की बीजदर पर्याप्त होती है। भिंडी के बीज सीधे खेत में ही बोये जाते हैं। बीज बोने से पहले खेत को तैयार करने के लिये 2-3 बार जुताई करनी चाहिए।

कल्टीवेटर से खेती के लाभ और खास बातें

कल्टीवेटर को वैसे तो साधारण कृषि यंत्र बताया जाता है लेकिन यदि हम पारंपरिक खेती के तौर-तरीकों को याद करें तो किसान भाइयों को इस बात का अहसास हो जायेगा कि यह कल्टीवेटर खेती-किसानी के लिए बहुत ही लाभकारी यंत्र है। किसान भाई जो काम हफ्तों में अपना पसीना बहाकर कर पाते थे वो काम कल्टीवेटर चंद घंटों में ही कर देता है। कल्टीवेटर से किसानों की जहां अनेक परेशानियां कम हुई हैं, वहीं खेती के उत्पादन में लाभ हुआ है और खेतों को बुवाई के लिए तैयार करना आसान हो गया है।

कल्टीवेटर क्या है : -

खेती के आधुनिक तरीके आने के बाद खेती करने का स्वरूप ही बदल गया है और खेती करना अब बहुत आसान हो गया है। जब से बैलों की जगह ट्रैक्टर आ गये हैं तब से प्राचीन कृषि यंत्रों की जगह नये कृषि यंत्रों ने जगह ले ली है, इसमें कल्टीवेटर सबसे प्रमुख है। जो खेतों की जुताई बैलों व हल से की जाती थी, वो काम इस कल्टीवेटर से किये जाते हैं। साथ ही अनेक अन्य ऐसे काम भी किये जाते हैं जो पैदावार को बढ़ाने में सहायक हैं। कल्टीवेटर बैल को जोत कर भी चलाये जा सकते हैं और ट्रैक्टर के पीछे लगाकर खेत की जुताई की जा सकती है। यह कल्टीवेटर 6फ्ट से लेकर 15फ्ट तक आता है।

पशू चालित कल्टीवेटर : - खेती के आधुनिक तरीके आने के बाद खेती करने का स्वरूप ही बदल गया है

ट्रैक्टर चालित कल्टीवेटर : - टैक्टर के पीछे हाइड्रोलिक के माध्यम से कल्टीवेटर चलाया जाता है। ये कल्टीवेटर जमीन की जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल किये जाते हैं। कंकरीली जमीन के लिए अलग कल्टीवेटर होता है और सामान्य जमीन के लिए अलग कल्टीवेटर होता है। इसके साथ गहरी जुताई करने के लिए अलग कल्टीवेटर होता है और उथली जुताई के लिए अलग कल्टीवेटर होता है।

इनमें से प्रमुख कल्टीवेटर इस प्रकार हैं:-

1.स्प्रिंग युक्त कल्टीवेटर : - पथरीली मिट्टी व या फसलों की ठूंठ वाले खेतों उपयोग किया जाता है। ट्रैक्टर से चलने वाले इस कल्टीवेटर में कई स्प्रिंग लगी होती है। स्प्रिंग की वजह से जुताई करते समय फार पर पड़ने वाले दबाव को कल्टीवेटर सहन कर लेता है और टाइन नहीं टूटने से बच जाता है। इस कारण यह कल्टीवेटर बिना किसी नुकसान के आसानी से मनचाही जुताई कर देता है।

2.स्प्रिंग रहित कल्टीवेटर (रिजिड लाइन कल्टीवेटर): बिना स्प्रिंग वाले कल्टीवेटर का इस्तेमाल कंकरीली या पथरीली भूमि में नहीं किया जाता है। इसका प्रयोग साधारण भूमि में किया जाता है। इसमें टाइन मजबूती के साथ फ्रेंम से इस प्रकार से लगाये जाते हैं कि जुताई करते समय दबाव पड़ने पर ये टाइन अपने स्थान से हटे नहीं। इस कल्टीवेटर की एक और खास बात यह है कि टाइन की दूरी को अपने हिसाब से दूर या पास किया जा सकता है। यह कल्टीवेटर खेत में खरपतवार को नियंत्रित करने में भी सहायक होता है।

3.डक फुट कल्टीवेटर : इन दोनों कल्टीवेटरों की अपेक्षा डक फुट कल्टीवेटर हल्का होता है। इसका मुख्य रूप से इस्तेमाल उथली जुताई करने और खरपतवारों को नष्ट करने के लिए किया जाता है। इसकी बनावट बिना स्प्रिंग वाले कल्टीवेटर की तरह होती है। इसमें फारों की संख्या जरूरत और आवश्यकता के अनुसार कम या ज्यादा की जा सकती है। इसमें टाइन का आकार बत्तख के पैर जैसा होता है इसलिये इस कल्टीवेटर को डक फूट कल्टीवेटर कहा जाता है।

कल्टीवेटर से जुताई के फायदे : -

कल्टीवेटर से अनेक तरह की जुताई की जा सकती है। सबसे पहले हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि जुताई कितने प्रकार की होती है और कल्टीवेटर किस जुताई में कितना मददगार साबित हो सकता है। खेत को तैयार करने के लिए हमें विभिन्न प्रकार की जुताई करनी होती है। इसमें ग्रीष्म ऋतु की जुताई, गहरी जुताई, छिछली जुताई, अधिक समय तक जुताई, हराई या हलाई की जुताई की जाती है।

1.कठोर जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए गहरी जुताई की जाती है। इस काम में कल्टीवेटर बहुत काम आता है। इस तरह से खेत की तैयारी गहरी जड़ों वाली फसलों के लिए की जाती है।

2.इसी तरह जिन फसलों की जड़े अधिक गहराई में नहीं जातीं हैं उनके लिए छिछली जुताई की जाती है। उसमें भी कल्टीवेटर काम में आता है।

3.ग्रीष्म ऋतु में अधिक जुताई इसलिये की जाती है ताकि उस मिट्टी में मौजूद हानिकारक कीट और उनके अंडे नष्ट हो जाते हैं। इसके अलावा मृदा में अनेक रोग भी दूर हो जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में अधिक समयतक जुताई करने में कल्टीवेटर बहुत लाभकारी साबित होता है।

4.एक फसल लिये जाने के बाद नई फसल की तैयारी के लिए कल्टीवेटर बहुत काम आता है। पहले तो वह खेत की मिट्टी को ढीला करता है और फसल के अवशेष को खेत से बाहर करता है। उसे बुवाई के लिए तैयार करता है।

5.बुवाई से पहले खेत में यदि नर्सरी लगाने की क्यारियां बनानी होतीं हैं तो कल्टीवेटर उसमें कभी काम आता है।

6.हैरों, पॉवर टिलर, रोटावेटर की अपेक्षा कल्टीवेटर सस्ता व हल्का होता है, जिससे कम एचपी वाले ट्रैक्टरों में लगाकर जुताई की जा सकती है।

7.पारंपरिक तरीके से खेती करने वाले किसानों को कल्टीवेटर से जुताई करने वा करवाने से पैसा और समय तो बचता ही है। साथ मजदूरों की समस्या से भी छुटकारा मिल जाता है।

8.छिटकवां विधि से बोई गई बीजों की मिट्टी में एक समान रूप से मिलाने तथा ढकने के लिए इस यंत्र का प्रयोग किया जाता है।

9.पंक्तियों में बोई फसलों में निराई-गुड़ाई का कार्य भी कल्टीवेटर से किया जाता है।

10.इसकी सहायता से फसल की जड़ो पर मिट्टी चढ़ाने का काय किया जा सकता है।

11.बुआई से पहले खेत में खाद को मिट्टी में मिलाने में भी कल्टीवेटर काम करता है।

कल्टीवेटर से मिलने वाले खेती के अन्य लाभे : -

1.बुआई से पहले कल्टीवेटर के माध्यम से खरपतवार हटाने और गुड़ाई का काम किया जा सकता है। जो काम पहले मजदूर काफी समय में करते थे वो काम कल्टीवेटर अकेला ही चंद घंटों में कर देता है। इससे कृषि लागत में कमी आती है और किसान भाइयों को लाभ मिलता है।

2.फसल के बीच में निराई-गुड़ाई कल्टीवेटर से किये जाने के लिए फसलों को कतार में बोया जाता है। इससे किसान भाइयों को यह लाभ होता है कि कतार में बीज बोने से बीज की बर्बादी नहीं होती है और फसल भी अधिक होती है।

3.कल्टीवेटर का प्रयोग मिट्टी की जुताई के लिये किया जाता है। इसके प्रयोग से खेत के खरपतवार व घास जड़ सहित उखड़ कर नष्ट हो जाती है या मिट्टी से अलग होकर जमीन के ऊपर आ जाती है जो बाद में सूर्य की गर्मी से सूख कर नष्ट हो जाती है।

कौन सी फसल के लिए कौन सा कल्टीवेटर है उपयोगी : -

1.स्प्रिंग युक्त कल्टीवेटर मुख्यत : दलहनी व जड़वाली सब्जियों की फसलों के लिए उपयोगी होता है। क्योंकि इससे गहरी जुताई की जा सकती है। स्प्रिंग युक्त कल्टीवेटर से गहरी जुताई से मूंग, मोठ, बरसीम, उड़द, सोयाबीन, मूंगफली, आलू, मूली, गाजर, शकरकंद, चना आदि मे अधिक लाभ मिलता है।

2. डक फुट कल्टीवेटर से उथली जुताई से गेहूं, जौ, ज्वार, जई, सरसों, आदि फसलों में अधिक लाभ मिलता है।

रीपर किसानों की आमदनी का अच्छा जरिया

जिन इलाकों में दमदार ट्रैक्टरो से खेती होती है वहां आधुनिक मशीनें आमदनी का अच्छा जरिया बन रही हैं। कम्बाइन हार्वेस्टर के साथ में स्ट्रारीपर की जरूरत हाती है। कम्बाइन से कटे गेहूं का यदि भूसा बनाना है तो यह रीपर के बगैर संभव नहीं। यह मशीन भी दो से ढाई लाख रुपए की आती है। रीपर के पीछे लोहे की जालीदार ट्राली लगी होती है। रीपर खेत में पड़े गेहूं के फसल अवशेषों को कतरकर भूसा बनाते हुए ट्राली में भरने का काम भी करती है। एक रीपर के साथ दो ट्राली का होना आवश्यक है। एक ट्राली भरकर खलने जाए उस दौरान काम को जारी रखने के लिए दूसरी ट्राली काम आती है। रीपर इतनी तेजी से भूसा बनाता है कि यदि गांव से ज्यादा दूरी पर मशीन चल रही हो तो एक रीपर के साथ तीन से चार ट्राली की जरूरत पडती है या फिर भूसा निकट ही किसानों के खेतों पर खलाना होता है।

रीपर से भूसा बनाने वाली ट्राली में तकरीबन पांच कुंतल भूसा ही आता है। इस ट्राली को दो से तीन किलोमीटर दूरी वाले इलाकों में घर तक पहुंचाने का एक हजार रुएक तक मशीन मालिक लेता है। खेत में भूसा बनाने से घर तक पहुंचाने के इस काम के लिए ट्रक्टर के अलावा चार पांच लाख रुपए की अवश्यकता होती है। मशीन को चलाने वाला चालक यदि ठीक से मशीन चलाए तो एक दिन में 25 से 30 हजार रुपए तक कमा सकता है।

तीनों कृषि कानून वापस लेने का ऐलान, पीएम ने किसानों को दिया बडा तोहफा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए 14 महीने से विवादों में घिरे चले आ रहे तीन कृषि कानूनों को वापस लेने का ऐलान करके पूरे राष्ट्र को चौंका दिया। इन तीनों कृषि कानूनों को लेकर किसान लगातार आंदोलन करते चले आ रहे हैं। किसान लगातार कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। इसके लिए दिल्ली सीमा पर भारी संख्या में किसान पिछले साल सितम्बर माह से आंदोलन कर रहे हैं। इस आंदोलन को लेकर सैकड़ों किसानों की जाने तक चलीं गयीं हैं। किसान इन कृषि कानूनों को लेकर सरकार से कोई भी समझौता करने को तैयार नहीं हो रहे थे। हालांकि सरकार ने यह समझाने की बहुत कोशिश की कि ये कानून छोटे किसानों के हितों के लिए हैं क्योंकि देश में 100 में से 80 किसान छोटे हैं। लेकिन आंदोलनरत किसानों ने तीन कृषि कानूनों को वापस लेने की जिद पकड़ ली है। किसानों की जिद के आगे सरकार को हथियार डालते हुए इन कृषि कानूनों को वापस लेने का फैसला लेना पड़ा।

किसानों के कल्याण के लिए ईमानदारी से कोशिश की थी : -

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमने हमेशा किसानों की समस्याओं और उनकी चिंताओं का ध्यान रखा और उन्हें दूर करने का प्रयास किया जब आ. पने हमें 2014 में सत्ता सौंपी तो हमें यह लगा कि किसानों के कल्याण, उनकी आमदनी बढ़ाने का कार्य करने का निश्चय किया। हमने कृषि वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों आदि से सलाह मशविरा करके कृषि के विकास व कृषि करने की आधुनिक तकनीक को अपना कर किसानों का हित करने का प्रयास किया। काफी विचार-विमर्श करने के बाद हमने देश के किसानों खासकर छोटे किसानों को उनकी उपज का अधिक से अधिक दाम दिलाने, उनका शोषण रोकने एवं उनकी सुविधाएं बढ़ाने के प्रयास के रूप में तीन नये कृषि कानून लाये गये। उन कृषि कानूनों को लागू किया गया।

किसानों को पूरी तरह से समझा नहीं पाये : -

राष्ट्र के नाम अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा कि हमने सच्चे मन एवं पवित्र इरादे से देश हित व किसान हित के सारे नियमों को समेट कर ये तीन कानून बनाये। देश के कोटि-कोटि किसानों, अनेक किसान संगठनों ने इन कृषि कानूनों का स्वागत किया एवं समर्थन दिया। इसके बावजूद किसानों का एक वर्ग इन कृषि कानूनों से नाखुश हो गया। उन्होंने कहा कि हमने इन असंतुष्ट किसानों से लगातार एक साल तक विभिन्न स्तरों पर बातचीत करने का प्रयास किया उन्हें सरकार की मंशा को समझाने का प्रयास किया। इसके लिए हमने व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से किसानों को समझाने का प्रयास किया। किसानों के असंतुष्ट वर्ग को समझाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों, मार्केट विशेषज्ञों एवं अन्य जानकार लोगों की मदद लेकर पूर्ण प्रयास किया किन्तु सरकार के प्रयास सफल नहीं हो पाये।

प्रधानमंत्री ने अपने संदेश में कहा कि सरकार ने दीपक के सत्य प्रकाश जैसे कृषि कानूनों के बारे में किसानों को समझाने का पूरा प्रयास किया लेकिन हमारी तपस्या में कहीं कोई अवश्य ही कमी रह गयी होगी जिसके कारण हम किसानों को पूरी तरह समझा नहीं पाये।

किसानों को मनाने का पूरा प्रयास किया : -

18 मिनट के राष्ट्र के नाम संदेश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज गुरु नानक जयंती जैसे प्रकाशोत्सव पर किसी से कोई गिला शिकवा नहीं है और न ही हम किसी में कोई दोष ठहराने की सोच रहे हैं बल्कि हमने जिस तरह से देश हित और किसान हित में ये कृषि कानून लाये थे। भले ही देश के अधिकांश किसानों ने इन कृषि कानूनों का समर्थन किया हो लेकिन किसान का एक वर्ग नाखुश रहा और हम उसे नही समझा पाये हैं। उन्होंने कहा कि हमने किसानों को हर तरह से मनाने का प्रयास किया।

किसानों को अनेक प्रस्ताव भी दिये : -

आंदोलनकारी किसानों ने कृषि कानूनों के जिन प्रावधानों पर ऐतराज जताया था, सरकार उनको संशोधित करने को तैयार हो गयी थी। इसके बाद सरकार ने इन कृषि कानूनों को दो साल तक स्थगित करने का भी प्रस्ताव दिया था। इसके बावजूद यह मामला सुप्रीम कोर्ट में पहुंच गया था। इन सब बातों को पीछे छोड़ते हुए सरकार ने नये सिरे से किसान हितों और देश के कल्याण के बारे में सोचते हुए प्रकाश पर्व जैसे अवसर पर इन कृषि कानूनों को वापस लेने का फैसला लिया है।

पिछली बातों को छोड़ कर आगे बढें -

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने संबोधन में आंदोलनकारी किसानों का आवाहन करते हुए कहा कि हम सब पिछली बातों को भूल जायें और नये सिरे से आगे बढें और देश को आगे बढाने का काम करें। उन्होंने कहा कि सरकार ने कृषि कानूनों को वापस करने का फैसला ले लिया है। उन्होंने कहा कि मैं आंदोलनकारी किसानों से आग्रह करता हूं कि वे आंदोलन को समाप्त करके अपने घरों को अपने परिवार के बीच वापस लौट आयें। अपने खेतों में लौट आयें। अपने संदेश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि इसी महीने के अंत में होने वाले संसद के सत्र में इन तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने की सभी विधिक कार्यवाही पूरी की जायेंगी।

किसान हित के लिए और बडा प्रयास करेंगे : -

प्रधानमंत्री का कहना है कि सरकार अब इससे अधिक बड़ा प्रयास करेगी ताकि किसानों का कल्याण उनकी मर्जी के अनुरूप किया जा सके। उन्होंने कहा कि सरकार ने छोटे किसानों का कल्याण करने, एमएसपी को अधिक प्रभावी तरीके से लागू करने सहित सभी प्रमुख मांगों पर आम राय बनाने के लिए एक कमेटी के गठन का फैसला लिया है। जिसे शीघ्र ही गठित करके नये सिरे से इससे भी बड़ा प्रयास किया जायेगा।

छोटे किसानों का कल्याण करना सरकार की प्राथमिकता : -

प्रधानमंत्री ने दोहराया कि हम लगातार छोटे किसानों के कल्याण के लिये प्रयास करते रहेंगे। देश में 80 प्रतिशत छोटे किसान हैं। इन छोटे किसानों के पास दो हेक्टेयर से भी कम खेती है। इस तरह के किसानों की संख्या 10 करोड़ से भी अधिक है। हमारी सरकार ने फसल बीमा योजना को अधिक से अधिक प्रभावी बनाया। 22 करोड़ किसानों को मृदा परीक्षण कार्ड देकर उनकी कृषि करने की तकनीक में मदद की। उन किसानों की कृषि लागत कम हो गयी तथा उनका लाभ बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि छोटे किसानों को ताकत देने के लिए सरकार ने हर संभव मदद देने का प्रयास किया और आगे भी ऐसे ही प्रयास करते रहेंगे।

सितम्बर, 2020 में शुरू हो गया था आंदोलन : -

लोकसभा से तीनों कृषि कानून 17 सितम्बर, 2020 को पास हो गये थे और राष्ट्रपति ने दस दिन बाद इन कृषि कानूनों पर अपनी मुहर लगाकर लागू कर दिया था। इसके बाद ही किसानों ने अपना आंदोलन शुरू कर दिया था। ये तीन कृषि कानूनों में पहला कानून कृषक उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सरलीकरण) विधेयक 2020, दूसरा कानून कृषक (सशक्तिकरण-संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करारा विधेयक 2020 तथा तीसरा आवश्यक वस्तु (संशोधन) 2020 नाम से तीसरा कानून था।

किन प्रावधानों पर थे किसान असंतुष्ट : -

किसानों को सबसे ज्यादा पहले कानून कृषक उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सरलीकरण) विधेयक 2020 के कई प्रावधानों में ऐतराज था। मंडी के बाहर फसल बेचने की आजादी, एमएसपी और कान्टेक्ट फार्मिंग के प्रावधानों पर कड़ी आपत्ति जतायी गयी थी। सरकार ने अनेक स्तरों से सफाई दी और अनेक तरह के आश्वासन दिये लेकिन आंदोलनकारी किसानों को कुछ भी समझ में नहीं आया और उन्होंने किसान से इन तीन कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग की जिद ठान ली। किसानों की जिद के सामने सरकार को आखिर झुकना पड़ा भले ही इसके लिए किसानों को 14 महीने का लम्बा समय अवश्य लगा।

करतार ऐग्रो ने ट्रैक्टर मार्केट में किया धमाका, तीन नये ट्रैक्टर किये लांच

1975 से किसानों के बीच कृषि उपकरण निर्माण को लेकर सबसे अधिक विश्वसनीय कंपनी करतार ऐग्रो ने हाल ही में तीन नये ट्रैक्टर लांच करके सबसे बड़ा धमाका किया है। करतार कंपनी ने तीन नये ट्रैक्टर 4036, 4536 और 5136 नामक मॉडल लांच करने के साथ ही भोपाल में लुधियाना ऐग्रो सेल्स के नाम से एक आकर्षक एवं भव्य शोरूम भी खोला है। इसके साथ ही कम्बाइन हार्वेस्टर बनाने वाली करतार कंपनी ने ट्रैक्ट्रर के क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा दिये हैं। किसानों के बीच कंपनी की लोकप्रियता और विश्वसनीयता को देखते हुए यह माना जा रहा है कि करतार ऐग्रो किसानों के लिए किफायती और सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टर बनायेगी। इससे किसानों को कृषि कार्य करने में काफी सुविधाएं होंगी। ऐसा माना जाता है कि करतार ऐग्रो ट्रैक्टर के क्षेत्र में भी नया रिकार्ड बनायेगी।

कम्बाइंड हार्वेस्टर फील्ड की कंपनी ने ट्रैक्टर जगत में किया प्रवेश : -

मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार नवम्बर के प्रथम सप्ताह में ही करतार ऐग्रो कंपनी ने 40, 47 और 51 हॉर्स पॉवर के तीन नये ट्रैक्टरों को लांच करके ट्रैक्टर जगत में जबर्दस्त धमाका किया है। नये मॉडल के लांचिंग के साथ ही भोपाल में लुधियाना ऐग्रो सेल्स के नाम से नया शोरूम का भी उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर कंपनी के वाईस प्रेसीडेंट शिवित वोहरा, शोरूम के संचालक व करतार ऐग्रो के डीलर देवेन्द्र चौकसे, विधायक रामेश्वर शर्मा, कृषि अभियांत्रिकी विभाग मध्य प्रदेश के संचालक राजीव चौधरी, ब्रांड मैनेजर अवजोत सिंह, अनूप सिन्हा, कृषि यंत्री अनिल पोरवाल, एस.पी. अहिरवार एवं भारी संख्या में किसान भाई भी उपस्थित रहे।

वाइस प्रेसीडेंट शिवित वोहरा ने लुधियाना एग्रो सेल्स शोरू का उद्घाटन करने के बाद वहां उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त किया तथा उन्हें यह आश्वासन दिया कि कंपनी अपनी पुरानी प्रतिष्ठा के अनुरूप ही ट्रैक्टरों से भी किसानों की उत्कृष्ट सेवा करती रहेगी। उन्होंने कहा कि कंपनी किसान हितों से किसी तरह कोई समझौता न तो अब तक किया है और न ही भविष्य में किसी तरह का कोई समझौता करेगी। श्री वोहरा ने कहा कि किसान और उनका हित ही हमारे लिये सर्वोपरि है।

करतार कंपनी के कृषि उपकरण किसानों की पहली पसंद हैं: शिवित वोहरा : -इस अवसर पर कंपनी के वाईस प्रेसीडेंट शिवित वोहरा ने बताया कि करतार ऐग्रो के कम्बाइन्ड हार्वेस्टर और अन्य कृषि उपकरण दशकों से किसानों की पहली पसंद बने हुए हैं। इस सफलता के बाद कंपनी ने ट्रैक्टर जगत में कदम रखने का फैसला किया है। उन्होंने बताया कि करतार ऐग्रो कंपनी आज से 46 साल पहले यानी कि 1975 से किसानों के लिए कृषि उपकरण बना कर सेवा कर रही है। जिस तरह कंपनी किसानों की उम्मीदों पर खरा उतर रही है उसी तरह किसान भाई कंपनी के द्वारा उत्पादित कृषि यंत्रों पर पूरा भरोसा जता रहे हैं।

ट्रैक्टर के क्षेत्र में करतार ऐग्रो बनाएगी रिकार्ड वाइए प्रेसीडेंट : -उन्होंने बताया कि कंपनी ने किसानों की जरूरत को देखते हुए ट्रैक्टर के निर्माण क्षेत्र में प्रवेश किया है और उम्मीद करता हूं कि जिस तरह से करतार कंपनी के कृषि उपकरण किसानों की पहली पसंद हैं उसी तरह हमारे ये नये ट्रैक्टर भी किसानों के बीच लोकप्रिय होंगे। ट्रैक्टरों की इन मॉडलों की नई टेक्नोलॉजी से किसानों को अधिक से अधिक लाभ मिलेगा।

नये ट्रैक्टरों की खूबियां बताई : -

उन्होंने कहा कि कंपनी ने किसानों के प्रत्येक छोटी से छोटी जरूरत एवं अधिक से अधिक सुविधा तथा किफायती ट्रैक्टर का निर्माण किया है। श्री वोहरा ने बताया कि ट्रैक्टर के नये मॉडल करतार 4036, करतार 4536 और करतार 5136 कम डीजल खपत में बहुत अच्छा माइलेज देते हैं। इससे किसानों का लागत खर्च बहुत कम हो जायेगा तथा लाभ में वृद्धि होगी।

इस अवसर पर भोपाल में खोले गये नये शोरूम लुधियाना ऐग्रो सेल्स के संचालक व करतार कंपनी के डीलर देवेन्द्र चौकसे ने बताया कि हमारा संस्थान करतार ऐग्रो के ट्रैक्टरों की बिक्री तो करेगा ही साथ ही उनका संस्थान करतार कंपनी के कृषि यंत्रों की सर्विस की भी सुविधा प्रदान करेगी।

करतार ऐग्रो के तीन नये मॉडल : -

करतार 4036
करतार 4536
करतार 5136

नया मॉडल करतार 4036: -

कंपनी ने छोटे व मध्यम किसानों की जरूरतों को देखते हुए करतार 4036 मॉडल को लांच किया है। डीजल की कम खपत पर बड़े-बड़े काम करने वाला ये मॉडल 40 हार्स पॉवर का है। कंपनी ने इस करतार 4036 मॉडल को सिंगल क्लच के साथ लांच किया है। इस मॉडल में करतार ऐग्रो कंपनी ने मैकेनिकल स्टीयरिंग फीचर दिया है। इसके अलावा इस मॉडल में ऐसी अनेक खूबियां हैं जो किसानों को अधिक से अधिक लाभ देंगी।

नये मॉडल करतार 4536 की खासियत है उसकी एचपी : -

कंपनी का यह दूसरा मॉडल करतार 4536 के नाम से आया है। इस मॉडल का नाम देखते ही भ्रम हो सकता है कि ये ट्रैक्टर 45 हॉर्स पॉवर का होगा लेकिर कंपनी ने किसानों को और अधिक सुविधाजनक ट्रैक्टर देने के इरादे से ट्रैक्टर के इस मॉडल को 47 हॉर्स पॉवर का बनाया है। कंपनी के वाइस चेयर मैन शिवित वोहरा के अनुसार ये ट्रैक्टर भले ही 47 हॉर्स पॉवर का है लेकिन ये ट्रैक्टर दूसरी कंपनियों के 50 हॉर्स पॉवर के ट्रैक्टरों के बराबर काम करेगा। कम से कम खपत में अधिक से अधिक माइलेज देगा। इस मॉडल की खूबसूरती यह है कि यह डबल क्लच में लांच किया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि करतार 4536 मॉडल में पॉवर स्टेयरिंग दिया गया है।

दमदार और किफायती मॉडल है करतार 5136 : -

करतार ऐग्रो कंपनी ने करतार 4036, करतार 4536 के साथ करतार 5136 मॉडल का भी ट्रैक्टर लांच किया है। यह ट्रैक्टर बड़ी जोत वाले किसानों के लिए है। ये ट्रैक्टर 51 हॉर्स पॉवर का है। कम डीजल में अधिक समय तक कार्य करने वाला ट्रैक्टर लम्बे समय तक बिना रुके काम करता रहता है। करतार ऐग्रो कंपनी के नये ट्रैक्टरों के मॉडल में यह माडल सबसे अधिक हॉर्स पावरका तो है ही साथ ही इसको डबल क्लच से लैस किया गया है। इसमें पॉवर स्टेयरिंग का फीचर दिया गया है।

करतार ऐग्रो की कुछ खास बातें : -

1.करतार ऐग्रो 1975 से किसानों को कृषि यंत्रों की सेवाएं देती आ रही है। इस कंपनी के उत्पाद इतने भरोसेमंद होते हैं कि अधिकांश किसान इसी कंपनी के कृषि यंत्र खरीदते हैं। करतार कंपनी का मैनेजमेंट किसानों के हितों का विशेष ध्यान रखता है। कृषि संयंत्रों के निर्माण के साथ किसानों को कृषि यंत्रों की सेवा इतनी अच्छी दी जाती है कि किसान इस कंपनी के अलावा दूसरी किसी कंपनी का कृषि यंत्र लेना पसंद नहीं करता है।

2.करतार ऐग्रो ने अपने तीन नये ट्रैक्टरों को लांच करते समय किसान भाइयों की जेब का बहुत अधिक ख्याल रखा है। कंपनी ने जहां ट्रैक. टर में डीजल की खपत कम से कम हो,इसका ध्यान रखा है और किसान भाइयों को ट्रैक्टर के खरीदने में भी बचत हो इस बात का ख्याल रखा है। इसके लिए करतार ऐग्रो कंपनी ने देश के विभिन्न राज्यों में किसानों की

3.सुविधा के अनुसार ट्रैक्टर के इन तीनों मॉडलों यानी करतार 4036, करतार 4536 और करतार 5136 के दाम अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तय किये हैं। इससे सभी किसानों को अपने-अपने राज्यों में मिल रही अनेक सुविधाओं के तहत ट्रैक्टर खरीदने में आसानी होगी। साथ ही इस सुविधा से किसानों को ट्रैक्टर किफायती दाम में मिलेंगे।

ट्रैक्टर खरीदने पर मिलेगी 50 फीसदी सब्सिडी, ऐसे उठा सकते हैं इस योजना का लाभ

खेती करने के लिए किसानों को ट्रैक्टर की जरूरत होती है। ऐसे में कुछ किसान तो किराए पर ट्रैक्टर लेकर अपनी खेती कर लेते हैं तो कुछ किसान बैलों के जरिए खेती करते हैं। लेकिन वे किसान जो आर्थिक तंगी के कारण ट्रैक्टर नहीं ले पाते हैं और ना ही इन्हें आसानी से बैल की सुविधा मिल पाती है। ऐसे किसानों के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक स्पेशल योजना निकाली है जिसके चलते 50% सब्सिडी पर कोई भी किसान ट्रैक्टर खरीद सकता है। जी हां यह सब्सिडी 'पीएम किसान ट्रैक्टर योजना' के जरिए दी जाएगी।

दरअसल, पीएम किसान के लिए हर संभव कोशिश कर रहे हैं जिसके चलते किसान को खेती करने में आसानी हो। इतना ही नहीं बल्कि वे लगातार किसानों के लिए नई-नई योजनाएं लेकर आ रहे हैं। बता दें, पीएम किसानों के खाते में हर साल 6 हजार रुपए भी देते हैं। ताकि हर किसान अपनी खेती के लिए बीज, खाद और इस तरह की मशीनें की जरूरत पूरी कर सके। इसी बीच अब केंद्र सरकार ट्रैक्टर पर भी सब्सिडी दे रही है जो किसानों के लिए काफी लाभदायक होगी। आइए जानते हैं पीएम किसान ट्रैक्टर योजना का लाभ आप कैसे उठा सकते हैं?

किसी भी कंपनी का खरीद सकते हैं ट्रैक्टर :- आपकी जानकारी के लिए बता दें कि, इस योजना के तहत आप किसी भी कंपनी का ट्रैक्टर खरीद सकते हैं। ट्रैक्टर खरीदने के दौरान आपको आधी कीमत चुकानी होगी जबकि इसका आधा पैसा सरकार सब्सिडी के तौर पर देगी। न सिर्फ केंद्र सरकार बल्कि राज्य सरकार भी किसानों को ट्रैक्टर खरीदने में सहायता करती है। दरअसल, राज्य सरकार अपने अपने स्तर पर ट्रैक्टरों पर 20% से 50% सब्सिडी दे रही है। ऐसे में अब किसानों को ट्रैक्टर खरीदने में आसानी होगी और वे केंद्र सरकार और राज्य सरकार के तहत दोनों ही योजना का लाभ उठा सकते हैं।.

कैसे उठाएं इस योजना का लाभ? :- बता दें, इस योजना का लाभ उठाना बेहद ही आसान है। यदि आप भी ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं तो इसके लिए आपको कुछ जरूरी डॉक्यूमेंट की आवश्यकता होगी। खास बात यह है कि, आप सिर्फ इस सब्सिडी का फायदा एक ही ट्रैक्टर खरीदने पर उठा सकते हैं। यदि आप दो ट्रैक्टर की खरीदारी करते हैं तो फिर आपको इस योजना का लाभ नहीं मिलेगा। इस योजना का लाभ उठाने के लिए आप नजदीकी बैंक सेंटर जाकर ऑनलाइन फॉर्म भर सकते हैं।

जरूरी डाक्यूमेंट्स :-

1.आधार कार्ड
2.बैंक की डिटेल
3.जमीन के कागज
4.पासपोर्ट साइज फोटो

कैसे करें आवेदन? :- इस योजना का लाभ उठाने के लिए आप ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। देशभर में सभी किसानों के लिए ये योजना है। आप चाहे तो ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों ही तरीके से आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए आपको नजदीकी जन सेवा केंद्र जाना होगा या फिर सीएससी डिजिटल सेवा के जरिए भी इसका लाभ उठा सकते हैं। बता दें, इस योजना के तहत सब्सिडी सीधे किसानों के बैंक खातों में डाल दी जाएगी। इस योजना को जारी करने के बाद सरकार का दावा है कि किसानों को खेती करने में आसानी होगी साथ ही खेती में लगने वाली लागत में भी कमी आएगी। ट्रैक्टर और विभिन्न नए कृषि यंत्रों का उपयोग करने से किसान के पास फसल का उत्पादन न सिर्फ अच्छा होता है बल्कि पहले से कई गुना ज्यादा बढ़ जाता है।

गिलोय के फायदे

गिलोय एक ही ऐसी बेल है, जिसे आप सौ मर्ज की एक दवा कह सकते हैं। इसलिए इसे संस्कृत में अमृता नाम दिया गया है। कहते हैं कि देवताओं और दानवों के बीच समुद्र मंथन के दौरान जब अमृत निकला और इस अमृत की बूंदें जहां-जहां छलकीं, वहां-वहां गिलोय की उत्पत्ति हुई।

इसका वानस्पिक नाम (Botanical name) टीनोस्पोरा कॉर्डीफोलिया (tinospora cordifolia) है। इसके पत्ते पान के पत्ते जैसे दिखाई देते हैं और जिस पौधे पर यह चढ़ जाती है, उसे मरने नहीं देती। इसके बहुत सारे लाभ आयुर्वेद में बताए गए हैं, जो न केवल आपको सेहतमंद रखते हैं, बल्कि आपकी सुंदरता को भी निखारते हैं। आइए जानते हैं गिलोय के फायदे.

गिलोय बढाती है रोग प्रतिरोधक क्षमता : -

गिलोय एक ऐसी बेल है, जो व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा कर उसे बीमारियों से दूर रखती है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर में से विषैले पदार्थो को बाहर निकालने का काम करते हैं। यह खून को साफ करती है, बैक्टीरिया से लड़ती है। लिवर और किडनी की अच्छी देखभाल भी गिलोय के बहुत सारे कामों में से एक है। ये दोनों ही अंग खून को साफ करने का काम करते हैं।

ठीक करती है बुखार : -

अगर किसी को बार-बार बुखार आता है तो उसे गिलोय का सेवन करना चाहिए। गिलोय हर तरह के बुखार से लडने में मदद करती है।

इसलिए डेंगू के मरीजों को भी गिलोय के सेवन की सलाह दी जाती है। डेंगू के अलावा मलेरिया, स्वाइन फ्लू में आने वाले बुखार से भी गिलोय छुटकारा दिलाती है।

गिलोय के फायदे – मधुमेह के रोगियों के लिए : -

गिलोय एक हाइपोग्लाइसेमिक एजेंट है यानी यह खून में शर्करा की मात्रा को कम करती है। इसलिए इसके सेवन से खून में शर्करा की मात्रा कम हो जाती है, जिसका फायदा टाइप टू डायबिटीज के मरीजों को होता है।

पाचन शक्ति बढाती है : -

यह बेल पाचन तंत्र के सारे कामों को भली-भांति संचालित करती है और भोजन के पचने की प्रक्रिया में मदद कती है। इससे व्यक्ति कब्ज और पेट की दूसरी गड़बडियों से बचा रहता है।

कम करती है स्ट्रेस : -

गलाकाट प्रतिस्पर्धा के इस दौर में तनाव या स्ट्रेस एक बड़ी समस्या बन चुका है। गिलोय एडप्टोजन की तरह काम करती है और मानसिक तनाव और चिंता (एंजायटी) के स्तर को कम करती है। इसकी मदद से न केवल याददाश्त बेहतर होती है बल्कि मस्तिष्क की कार्यप्रणाली भी दुरुस्त रहती है और एकाग्रता बढ़ती है।

बढाती है आंखों की रोशनी : -

गिलोय को पलकों के ऊपर लगाने पर आंखों की रोशनी बढ़ती है। इसके लिए आपको गिलोय पाउडर को पानी में गर्म करना होगा। जब पानी अच्छी तरह से ठंडा हो जाए तो इसे पलकों के ऊपर लगाएं.

अस्थमा में भी फायदेमंद : -

मौसम के परिवर्तन पर खासकर सर्दियों में अस्थमा को मरीजों को काफी परेशानी होती है। ऐसे में अस्थमा के मरीजों को नियमित रूप से गिलोय की मोटी डंडी चबानी चाहिए या उसका जूस पीना चाहिए। इससे उन्हें काफी आराम मिलेगा।

गठिया में मिलेगा आराम : -

गठिया यानी आर्थराइटिस में न केवल जोड़ों में दर्द होता है, बल्कि चलने-फिरने में भी परेशानी होती है। गिलोय में एंटी आर्थराइटिक गुण होते हैं, जिसकी वजह से यह जोड़ों के दर्द सहित इसके कई लक्षणों में फायदा पहुंचाती है।

अगर हो गया हो एनीमिया, तो करिए गिलोय का सेवन : -

भारतीय महिलाएं अक्सर एनीमिया यानी खून की कमी से पीडित रहती हैं। इससे उन्हें हर वक्त थकान और कमजोरी महसूस होती है। गिलोय के सेवन से शरीर में लाल रक्त कणिकाओं की संख्या बढ़ जाती है और एनीमिया से छुटकारा मिलता है।

बाहर निकलेगा कान का मैल : -

कान का जिद्दी मैल बाहर नहीं आ रहा है तो थोड़ी सी गिलोय को पानी में पीस कर उबाल लें। ठंडा करके छान के कुछ बूंदें कान में डालें। एक-दो दिन में सारा मैल अपने आप बाहर जाएगा।

कम होगी पेट की चर्बी : -

गिलोय शरीर के उपापचय (मेटाबॉलिजम) को ठीक करती है, सूजन कम करती है और पाचन शक्ति बढ़ाती है। ऐसा होने से पेट के आस-पास चर्बी जमा नहीं हो पाती और आपका वजन कम होता है।

यौनेच्छा बढाती है गिलोय : -

आप बगैर किसी दवा के यौनेच्छा बढ़ाना चाहते हैं तो गिलोय का सेवन कर सकते हैं। गिलोय में यौनेच्छा बढ़ाने वाले गुण पाए जाते हैं, जिससे यौन संबंध बेहतर होते हैं।

खूबसूरती बढाती है गिलोय : -

गिलोय न केवल सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है, बल्कि यह त्वचा और बालों पर भी चमत्कारी रूप से असर करती है

जवां रखती है गिलोय : -

गिलोय में एंटी एजिंग गुण होते हैं, जिसकी मदद से चेहरे से काले धब्बे, मुंहासे, बारीक लकीरें और झुर्रियां दूर की जा सकती हैं। इसके सेवन से आप ऐसी निखरी और दमकती त्वचा पा सकते हैं, जिसकी कामना हर किसी को होती है।

अगर आप इसे त्वचा पर लगाते हैं तो घाव बहुत जल्दी भरते हैं। त्वचा पर लगाने के लिए गिलोय की पत्तियों को पीस कर पेस्ट बनाएं। अब एक बरतन में थोड़ा सा नीम या अरंडी का तेल उबालें। गर्म तेल में पत्तियों का पेस्ट मिलाएं। ठंडा करके घाव पर लगाएं। इस पेस्ट को लगाने से त्वचा में कसावट भी आती है।

बालों की समस्या भी होगी दूर : - अगर आप बालों में डैंड्रफ, बाल झडने या सिर की त्वचा की अन्य समस्याओं से जूझ रहे हैं तो गिलोय के सेवन से आपकी ये समस्याएं भी दूर हो जाएंगी।

गिलोय का प्रयोग ऐसे करें : - अब आपने गिलोय के फायदे जान लिए हैं, तो यह भी जानिए कि गिलोय को इस्तेमाल कैसे करना है

1- गिलोय जूस : - गिलोय की डंडियों को छील लें और इसमें पानी मिलाकर मिक्सी में अच्छी तरह पीस लें। छान कर सुबह-सुबह खाली पेट पीएं। अलग-अलग ब्रांड का गिलोय जूस भी बाजार में उपलब्ध है।

2- काढा : - चार इंच लंबी गिलोय की डंडी को छोटा-छोटा काट लें। इन्हें कूट कर एक कप पानी में उबाल लें। पानी आधा होने पर इसे छान कर पीएं। अधिक फायदे के लिए आप इसमें लौंग, अदरक, तुलसी भी डाल सकते हैं।

3- पाउडर : - यूं तो गिलोय पाउडर बाजार में उपलब्ध है। आप इसे घर पर भी बना सकते हैं। इसके लिए गिलोय की डंडियों को धूप में अच्छी तरह से सुखा लें। सूख जाने पर मिक्सी में पीस कर पाउडर बनाकर रख लें।

4- गिलोय वटी : - बाजार में गिलोय की गोलियां यानी टेबलेट्स भी आती हैं। अगर आपके घर पर या आस-पास ताजा गिलोय उपलब्ध नहीं है तो आप इनका सेवन करें।

साथ में अलग-अलग बीमारियों में आएगी काम : - अरंडी यानी कैस्टर के तेल के साथ गिलोय मिलाकर लगाने से गाउ.

ट(जोड़ों का गठिया) की समस्या में आराम मिलता है।इसे अदरक के साथ मिला कर लेने से रूमेटाइड आर्थराइटिस की समस्या से लड़ा जा सकता है।चीनी के साथ इसे लेने से त्वचा और लिवर संबंधी बीमारियां दूर होती हैं।आर्थराइटिस से आराम के लिए इसे घी के साथ इस्तेमाल करें।कब्ज होने पर गिलोय में गुड़ मिलाकर खाएं।

साइड इफेक्ट्स का रखें ध्यान : - वैसे तो गिलोय को नियमित रूप से इस्तेमाल करने के कोई गंभीर दुष्परिणाम अभी तक सामने नहीं आए हैं लेकिन चूंकि यह खून में शर्करा की मात्रा कम करती है। इसलिए इस बात पर नजर रखें कि ब्लड शुगर जरूरत से ज्यादा कम न हो जाए। 'गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को गिलोय के सेवन से बचना चाहिए।पांच साल से छोटे बच्चों को गिलोय का प्रयोग ना करने दें आप .

एक निवेदन : - अभी वर्षाऋतु का काल है अपने घर में, बड़े गमले या आंगन में जंहा भी उचित स्थान हो गिलोय की बेल अवश्य लगायें एवं स्वजनों को भी देवें. यह बहु उपयोगी वनस्पति ही नही बल्कि आयुर्वेद का अमृत और ईश्वरीय अवदान है ।

जनवरी माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

आलेख
डॉ.उदयभान सिंह
अधिश्ठाता
कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर

जनवरी माह में उद्यानिकी कार्य: -

फल: -

1.आम के थांवलों की निराई-गुडाई करें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। यदि गत माह पौधों में खाद-उर्वरक नहीं दिया गया हो तो आम के पौधों में पौधे की उम्र के हिसाब से प्रथम,द्वितीय,तृतीय,चतुर्थ, व पंचम, तथा पाँच वर्ष से अधिक के पौधों में क्रमशः 15,30,45,60, 75 किग्रा. गोबर की खाद और 0.25,0.50,0.75,1.00 किग्रा. सुपर फास्फेट एवं चतुर्थ वर्ष में 0.25 किग्रा. व पाँच व अधिक उम्र के पौधों में 0.50 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौंधा देवें व सिंचाई करें।

2. अनार के बीजू पौधे तैयार करने हेतु बीज संग्रहण के लिये मातृ वृक्षों का चयन करें।

3. बेर आंवला व अमरुद के बीज पौधे (मूल वृन्त) तैयार करने हेतु बीज व्यवस्था करें। पपीता में प्रति पौधा 35 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम सुपर फास्फेट तथा 75 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश देवें तथा सिंचाई करें।

4. अंगूर की परलेट किस्म में एक वर्ष पुरानी तृतीय शाखाओं पर लगभग 60 प्रतिशत केन पर कलिकाओं की संख्या 4-5 तथा थाम्पसन सीडलेस में 5-8 रखकर तथा शेष 40 प्रतिशत केन पर 2 कलिका रखकर कृन्तन करें। अंतिम कलिका से आधा इंच छोडकर केन काटनी चाहिए। कमजोर , सूखी व रोगग्रस्त शाखाओं को काट देवें। कटाई, छंटाई, करते समय तने की उखडी हुई छाल को हटाकर ताम्रयुक्त फंफूद नाशक का लेप लगा देवें। कटाई छटाई के बाद खाद एवं उर्वरक देकर सिंचाई करें।

सब्जियाँ : -

1.आलू की पछेती फसल में 60-75 किग्रा. नत्रजन प्रति हैक्टर देकर सिंचाई करें।

2. खरीफ प्याज के लिये गंठी तैयार करने हेतु बीज बोये। एक हैक्टर के लिये 10 किग्रा. बीज पर्याप्त होता है। रबी प्याज की रोपाई करें।

3. टमाटर की पौध की रोपाई करें। देशी किस्मों हेतु 150 क्वि. गोबर की खाद, 60 किग्रा. नत्रजन , 80 किग्रा. फास्फोरस व 60 किग्रा पोटाश तथा संकर किस्मों में 250-300 क्विं गोबर की खाद, 180 किग्रा नत्रजन, 120 किग्रा. फास्फोरस तथा 80 किग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर देवें।

4.कुष्माण्ड कुल की ग्रीष्मकालीन सब्जियों हेतु खेत की तैयारी करें। इनके लिये 200-250 क्विं गोबर की खाद, 80-100 किग्रा. नत्रजन 40 किग्रा फास्फोरस व 40 किग्रा पोटाश प्रति हैक्टर की दर से देवें। लौकी व कद्दू के बीजों की बुवाई हेतु 3 मी. दूरी पर तथा अन्य कुष्माण्ड कुल की सब्जियों हेतु 2 मी. दूरी पर आधा मीटर चौडी नालियाँ बनावें।

क्र.सं.	फसल	बीज दर (किग्रा./है.)	उन्नत किस्में
1.	लौकी	4-5	पूसा समर प्रोलीफिक लौंग, पूसा मंजरी, पूसा नवीन, अर्का बहार, पूसा समर, प्रोलीफिक राउण्ड, पूसा मेधदूत, काशी गंगा, पंजाब कोमल, पंजाब लौंग, थार समृद्धि
2.	तुरई	4-5	पूसा चिकनी, पूसा नसदार, अर्का सुमीत,अर्का सुजात पूसा नूतन, पंजाब सदाबहार, पूसा स्नेहा
3.	टिण्डा	4-5	बीकानेरी ग्रीन, अर्का टिण्डा
4.	करेला	4-5	अर्का हरित, कोयम्बटूर लौंग,पूसा विशेष, पूसा औषधि, काशी उर्वशी
5.	खीरा	2-2.5	अर्का हरित, कोयम्बटूर लौंग,पूसा विशेष, पूसा औषधि, काशी उर्वशी

6.	कद्दू	4-5	पूसा विश्वास, अर्का चंदन, पूसा विकास, काशी हरित, कोयम्बटूर-1
7.	ककडी	2-2.5	अर्का शीतल, लखनऊ अगेती, पंजाब लौंगमेलन-1
8.	तरबूज	4-5	बीकानेरी ग्रीन, अर्का टिण्डा
9.	खरबूजा	1.5-2	दुर्गापुरा मधु, पंजाब हाइब्रिड, हिसार मधुर, पंजाब सुनहरी, पंजाब हाइब्रिड, पूसा रसराज, काशी मधु, पूसा शर्बती

5.सौंफ में फूल आते समय 30 किग्रा. नत्रजन प्रति हैक्टर देकर सिंचाई करें। दें।

फूल : -

1. गुलाब की कटाई-छंटाई करें। रोगग्रस्त व सूखी टहनियाँ भी हटा देवें।
2. कलमों द्वारा गुलाब के पौधे तैयार करें। कलमों को रुटेक्स अथवा सिरेडेक्स पाउडर से उपचारित कर लें।
3. वार्षिक गुलदाउदी की पौध की खेत में रोपाई करें।

अन्य : -

फलदार पौधे व सब्जियों का पाले से बचाव करें।

उपाय :-

1. उत्तर-पष्चिम दिशा में वायुरोधी पौधे लगायें।
2. छोटे पौधों में ***उत्तर-पश्चिम*** दिशा में टाटी लगायें।
3. हल्की सिंचाई करें।
4. धूँआ करें।
5. व्यापारिक सल्फ्यूरिक अम्ल के 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।
6. रेडियो, टी.वी. से भीतलहर की जानकारी लेते रहें।

फल कीट एवं उनका नियंत्रण :-

1. अमरुद की मिलीबग - टहनियों व पंखाडियों में चिपककर रस चूसती हैं। डाईमिथोएट 30 ई.सी. 1 मिलीलीटर पानी के घोल में छिडकाव करें।
2. नींबू व पपीता का मूल ग्रन्थी रोग - पत्तियों पीली पड जाती हैं। टहनियाँ सूख जाती हैं। कारबोफ्यूरान 3 जी 8-10 ग्राम प्रति पेड की दर से प्रयोग करें।
3.पपीता का हरा तेला - पत्तियों का रस चूसकर नुकसान पंहुचाता हैं। इमीडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल 0.3 मिलीलीटर प्रतिलीटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करें।
4.अमरुद का छाल भक्षक कीट-वृक्ष की छाल खाते है व डाली में सुरंग बनाते हैं। नर्सरी तथा बगीचों में क्लोरोपाइरीफॉस अथवा क्यूनॉलफॉस 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।
5.अनार की मिलीबग - कोमल टहनियों व फूलों से रस चूसती हैं। मैलाथियोन 50 ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी का छिडकाव करें।

सब्जी कीट नियंत्रण :-

1. बैंगन,टमाटर, व मिर्च में मकडी, थ्रिप्स सफेद मक्खी - पत्तियों व तनो से रस चूसते हैं। मिथाइल डिमेटोन 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।
2. बैंगन का फल व तना छेदक - शाखाये मुरझाकर नष्ट हो जाती है। फल काणे होकर सडते है। मेलाथियोन 50 ई.सी. 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।
3. टमाटर का पत्ती भक्षक कीट व फल छेदक कीट - फलों व पत्तियों को खाकर नुकसान पहुँचाते हैं। मेलाथियोन 50 ई.सी. 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।

फल रोग एवं नियंत्रण :-

1. आम का मालफॉरमेशन - पत्तियॉ गुच्छों में परिवर्तित हो जाती हैं। प्लेनोफिक्स 1 मिलीलीटर या बाविस्टीन 1 ग्राम एवं डाईजीनान 1 मिलीलीटर प्रतिलीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करें।

2. नीबू में साइटस कैंकर - टहनियों, पत्तियों व फलों पर भूरे उठे हुये धब्बे बनते है। बोरडेक्स मिश्रण (5:5:50) या स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 250 मि.ग्रा. व बाविस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें।

3. आम का ब्लेक टिप रोग - फलों के शीर्ष पर काले धब्बे बनते हैं। बोरेक्स 5 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें।

4.पपीता का विभाणु रोग - पत्तियॉ छोटी कुंचित व विकृत हो जाती हैं। फास्फोमिडान 85 एस.एल आधा मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करें।

5.पपीता का तना गलन रोग - भूमि की सतह से तना सडना प्रारम्भ हो जाता हैं। पानी का निकास ठीक करें या केप्टान 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या (6:6:60) बोर्डो मिश्रण का छिडकाव करें।

सब्जियों के रोग व नियंत्रण :-

1. बैंगन में छोटी पत्ती रोग - यह रोग माइको प्लाज्मा जनित है। पत्तियॉ छोटी व गुच्छो में परिवर्तित हो जाती है। मेलाथियोन 50 ई.सी. 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।

2. बैंगन, टमाटर, मिर्च कुष्माण्ड कुल की सब्जियॉ व पत्ती वाली सब्जियों में झुलसा रोग - पत्तियो पर गीरे भूरे धब्बे बन जाते हैं। मेंकोजेब 0.2 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।

3. टमाटर, बैंगन व मिर्च में पर्णकुंचन व मोजेक - पत्ते सिकुड जाते है, झुर्रियां पड जाती है, हरे पीले रंग के धब्बे दिखाई देते है। इमीडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें।

4.मिर्च में जीवाणु पत्ती धब्बा रोग - पत्तियॉ पर छोटे-छोटे उठे हुये भूरे धब्बे दिखाई देते है। स्ट्रेप्टो साइक्लीन 200 मि.ग्रा. व बविस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें।

पेश है नया
POWERTRAC
434
DS Super Saver
ज़्यादा पावर, ज़्यादा बचत
हर काम करे फटाफट
25 kW (34 HP)
नं. 1 किफ़ायती
*नियम व शर्तें लागू।

किसानों के लिए बहुत किफायती हैं
न्यू हॉलैंड के ये ट्रैक्टर
New Holland
3032 35hp 26.09 kW TX
New Holland
3230 42hp 31.31 kW TX
New Holland
3630 Super Plus TX